PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

SOCIOLOGY MARGDARSHIKA BOOKLET

Features

Comprehensiive Syllabus Coverage
All 10 UGC-NET Sociology units in one concise gulde.

Unit-Wise 'What to Study' Focus
Priority topics like Durkheim, Marx & Weber; Parsons & Merton; Goffman: Foucault; Indian thinkers.

Effective Study Strategies
Thinker–concept matrices, comparative tables, flowcharts, and a technical-term glossary.

Exam-Oriented Tips
MCQ guidance with match-the-following, assertion–reasoning, chronological ordering, and elimination tricks.

Ready-Made Study Kit & Support
PDF booklet with summaries, charts, quick-revision sheets, plus WhatsApp help at +91 76900 22111 / 92162 28788

Updated to 2025 Edition
Reflects the latest UGC-NET patterns anad syllabus changes.

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट
UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढ़े इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT मे success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नही है ।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT,Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे है, जो वर्किंग है, जिन्हे उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नही देखना चाहते है, उनके लिए बेहद उपयोगी है । उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets मे उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास प्रश्न और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet मे यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

समाजशास्त्र मार्गदर्शिका पुस्तिका

इकाई-1: समाजशास्त्रीय सिद्धांत

क्या अध्ययन करें (इन टॉपिक पर अत्यधिक ध्यान दें)

- **1. शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ**
  - **एमिल दुर्खीम:** उनकी आधारभूत अवधारणाओं में गहराई से उतरें:
    - सामाजिक तथ्य : उनकी विशेषताएं (बाह्यता, बाधा) और समाजशास्त्रीय पद्धति के लिए निहितार्थ।
    - श्रम विभाजन: यांत्रिक और जैविक एकजुटता, बदलाव के कारण और परिणाम।
    - एनोमी: आदर्शहीनता की अवधारणा और इसके सामाजिक निहितार्थ।
    - आत्महत्या: उनकी प्रतीक-प्रणाली (अहंकारी, परोपकारी, असामाजिक, भाग्यवादी) और यह सिद्धांत कि आत्महत्या की दरें सामाजिक घटनाएं हैं।
    - धर्म: पवित्र और अपवित्र के बीच का अंतर , सामूहिक उत्साह, और धर्म के सामाजिक कार्य (जैसा कि धार्मिक जीवन के प्राथमिक रूपों में खोजा गया है)।
  - **मैक्स वेबर:** उनके बहुमुखी योगदान का अन्वेषण करें:
    - सामाजिक क्रिया: सामाजिक क्रिया की उनकी टाइपोलॉजी (ज़्वेक्रेशनल, वर्ट्रेशनल, एफेक्टिव, पारंपरिक) और व्यक्तिपरक अर्थ को समझने का महत्व (वेरस्टेन)।
    - आदर्श प्रकार: समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए एक पद्धतिगत उपकरण के रूप में।
    - अधिकार: उन्होंने अधिकार को पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत-कानूनी प्रकारों में वर्गीकृत किया है।
    - नौकरशाही: आदर्श-विशिष्ट नौकरशाही की विशेषताएं, फायदे और नुकसान (लौह पिंजरे)।
    - प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना: कैल्विनवादी नैतिकता और आधुनिक पूंजीवाद के उदय के बीच वैकल्पिक आत्मीयता पर उनका शोध प्रबंध।
    - वर्ग, स्थिति, पार्टी: सामाजिक स्तरीकरण के प्रति उनका बहुआयामी दृष्टिकोण।
  - **कार्ल मार्क्स:** उनके आलोचनात्मक और भौतिकवादी दृष्टिकोण को समझें:
    - ऐतिहासिक भौतिकवाद: यह विचार कि भौतिक परिस्थितियाँ (उत्पादन के तरीके) ऐतिहासिक परिवर्तन के प्राथमिक चालक हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- उत्पादन के तरीके: उत्पादन की शक्तियों और संबंधों की अवधारणाएं, तथा ऐतिहासिक तरीकों का अनुक्रम (आदिम साम्यवाद, प्राचीन, सामंती, पूंजीवादी, समाजवादी/साम्यवादी)।
- वर्ग और वर्ग संघर्ष : समाज प्रमुख और अधीनस्थ वर्गों (पूंजीवाद में पूंजीपति वर्ग बनाम सर्वहारा वर्ग) के बीच संघर्ष के क्षेत्र के रूप में।
- अलगाव: पूंजीवाद के अंतर्गत श्रमिकों द्वारा अनुभव किये जाने वाले अलगाव के विभिन्न रूप।
- अधिशेष मूल्य: पूंजीवाद में लाभ का स्रोत, जो श्रम के शोषण से प्राप्त होता है।
- पूंजीवाद की आलोचना: इसके अंतर्निहित विरोधाभास और अंततः पराभव।

- **2. संरचना- कार्यात्मकता और संरचनावाद:**
  - **ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की :** मानवविज्ञान में उनकी आवश्यकता कार्यात्मकता को समझें , जहां सांस्कृतिक लक्षणों और संस्थाओं को बुनियादी मानव जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के रूप में देखा जाता है।
  - **एआर रैडक्लिफ -ब्राउन:** उनके संरचनात्मक -कार्यात्मक दृष्टिकोण का अध्ययन करें , जो समग्र सामाजिक संरचना के रखरखाव और एकीकरण में सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं के योगदान पर जोर देता है। सामाजिक संरचना , सामाजिक कार्य और तुलनात्मक पद्धति जैसी अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करें।
  - **टैल्कॉट पार्सन्स:** उनके भव्य सैद्धांतिक ढांचे का अन्वेषण करें:
    - सामाजिक व्यवस्था: इसके घटक और अंतर्संबंध।
    - एजीआईएल मॉडल (योजना): किसी भी सामाजिक प्रणाली की चार कार्यात्मक पूर्वापेक्षाएँ : अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण और विलंबता (पैटर्न रखरखाव)।
    - पैटर्न चर: सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों द्वा रा किए जाने वाले द्विभाजी विकल्पों का समूह।
  - **रॉबर्ट के. मेर्टन:** कार्यात्मकता के उनके परिष्कृत रूप को समझें:
    - प्रकट एवं अव्यक्त कार्य : इच्छित/मान्यता प्राप्त परिणामों और अनपेक्षित /अपरिचित परिणामों के बीच अंतर करना।
    - दुष्क्रियाएँ: सामाजिक प्रतिरूप जिनका समाज के संचालन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
    - एनोमी (तनाव सिद्धांत): सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत साधनों के बीच विसंगति के रूप में एनोमी की पुनर्परिभाषा।
    - मध्य-श्रेणी सिद्धांत: ऐसे सिद्धांतों की वकालत करना जो लघु कार्यशील परिकल्पनाओं और सर्वव्यापी भव्य सिद्धांतों के बीच मध्यवर्ती हों।
  - **क्लाउड लेवी स्ट्रॉस:** उनके मानवशास्त्रीय संरचनावाद का अध्ययन करें, जो मानव मन की अंतर्निहित सार्वभौमिक संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो सांस्कृतिक घटनाओं जैसे कि रिश्तेदारी

प्रणालियों, मिथकों और वर्गीकरण प्रणालियों को आकार देते हैं। बाइनरी विरोधों के उनके उपयोग को समझें।

- **3. व्याख्यात्मक और व्याख्यात्मक परंपराएँ**
  - **जीएच मीड:** प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में उनके योगदान पर ध्यान दें:
    - स्व: सामाजिक संपर्क के माध्यम से स्व का विकास , 'मैं' (सहज स्व) और 'मुझे' (सामाजिक स्व) के बीच अंतर।
    - सामान्यीकृत अन्य: समाज के आंतरिक दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और अपेक्षाएँ।
    - भाषा और प्रतीकों की भूमिका: मानव विचार और सामाजिक संपर्क में उनकी केंद्रीयता।
  - **कार्ल मैनहेम:** उनके ज्ञान के समाजशास्त्र का अध्ययन करें:
    - विचारधारा और स्वप्नलोक : सामाजिक रूप से अनुकूलित विचार प्रणालियों से संबंधित अवधारणाएँ जो या तो विद्यमान सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखती हैं (विचारधारा) या चुनौती देती हैं (स्वप्नलोक)।
    - संबंधवाद: उनका विचार है कि ज्ञान संदर्भ-बद्ध है और विशिष्ट सामाजिक स्थितियों से संबंधित है।
  - **अल्फ्रेड शुट्ज़:** उनके परिघटनाशास्त्रीय समाजशास्त्र को समझें:
    - जीवन-जगत (लेबेन्सवेल्ट): व्यक्तियों द्वारा अनुभव और व्याख्या की गई रोजमर्रा की दुनिया।
    - अंतरविषयकता: साझा अर्थ और वास्तविकताएं किस प्रकार निर्मित होती हैं।
    - विशिष्टीकरण: ज्ञान का भंडार और विशिष्ट संरचनाएं जिनका उपयोग सा माजिक वास्तविकता को समझने के लिए किया जाता है।
  - **हेरोल्ड गारफिंकेल:** नृजातीय पद्धति पर ध्यान:
    - रोजमर्रा के तरीकों का अध्ययन जो लोग अपने सामाजिक संसार को समझने और उसे पूरा करने के लिए उपयोग करते हैं।
    - अनुक्रमणिकाता और प्रतिवर्तिता: संदर्भ में अर्थ का निर्माण कैसे किया जाता है, इसके लिए केन्द्रीय अवधारणाएं।
    - उल्लंघन प्रयोग: स्वीकृत सामाजिक मानदंडों को उजागर करने के लिए प्रयुक्त विधियाँ।
  - **एर्विंग गोफमैन:** उनके नाट्यशास्त्रीय दृष्टिकोण का अध्ययन करें:
    - स्वयं की प्रस्तुति : सामाजिक जीवन एक नाटकीय प्रदर्शन के रूप में जहां व्यक्ति छापों का प्रबंधन करते हैं।
    - इंप्रेशन प्रबंधन, कलंक, फ्रेम विश्लेषण।
  - **क्लिफोर्ड गीर्ट्ज़:** उनके व्याख्यात्मक मानवशास्त्र को समझें:

- प्रतीकों की एक प्रणाली के रूप में संस्कृति: संस्कृति को व्याख्यायित किये जाने वाले पाठ्य के रूप में देखना।
- मोटा विवरण: विस्तृत, प्रासंगिक नृवंशविज्ञान व्याख्या की विधि।

- **4. उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तर संरचनावाद और उत्तर उपनिवेशवाद**
  - **एडवर्ड सईद:** ओरिएंटलिज्म की उनकी प्रभावशाली अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करें - शक्ति और प्रभुत्व का प्रयोग करने के तरीके के रूप में पूर्व के पश्चिमी शैक्षणिक और कलात्मक प्रतिनिधित्व की आलोचना।
  - **पियरे बौर्डियू:** उनकी प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन करें:
    - आदतें (Habitus): टिकाऊ, परिवर्तनशील स्वभाव की प्रणालियाँ जो व्यक्ति समाजीकरण के माध्यम से अर्जित करते हैं।
    - पूंजी: विभिन्न रूप – आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक पूंजी।
    - क्षेत्र: अपने स्वयं के नियमों, हिस्सेदारी और पूंजी के रूपों के साथ संरचित सामाजिक स्थान।
    - भेद: सांस्कृतिक रुचियां और प्रथाएं सामाजिक वर्ग से किस प्रकार जुड़ी हुई हैं।
  - **मिशेल फूको:** उनके कार्य को समझें:
    - शक्ति/ज्ञान: यह विचार कि शक्ति और ज्ञान आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं और परस्पर संरचनात्मक हैं।
    - प्रवचन: अर्थ की प्रणालियाँ जो विश्व के बारे में हमारी समझ को आकार देती हैं।
    - अनुशासन और शासन-प्रणाली: सत्ता, जनसंख्या पर शासन करने की अनुशासनात्मक प्रथाओं और तकनीकों के माध्यम से कैसे संचालित होती है।
    - पुरातत्व और वंशावली : ऐतिहासिक प्रवचनों और शक्ति संबंधों का अध्ययन करने के लिए उनके पद्धतिगत दृष्टिकोण।
  - **जुर्गेन हेबरमास:** उनके आलोचनात्मक सिद्धांत पर ध्यान दें:
    - संचारात्मक कार्रवाई का सिद्धांत : सामाजिक व्यवस्था के आधार के रूप में तर्कसंगत प्रवचन और अंत:विषय समझ पर जोर।
    - सार्वजनिक क्षेत्र: तर्कसंगत-आलोचनात्मक बहस का क्षेत्र।
    - वैधीकरण संकट: यह विचार कि आधुनिक पूंजीवादी राज्य वैधता के संकट का सामना करते हैं।
  - **एंथनी गिडेंस:** उनके संरचना सिद्धांत का अध्ययन करें:
    - संरचना और एजेंसी का द्वंद्व - सामाजिक संरचनाएं मानवीय कार्यों का माध्यम और परिणाम दोनों हैं।
    - उत्तर आधुनिकता/उच्च आधुनिकता और रिफ्लेक्सिविटी .

- **मैनुअल कास्टेल्स:** उनके कार्य को समझें:
  - नेटवर्क सोसायटी: यह विचार कि समकालीन समाज सूचना नेटवर्क के इर्द-गिर्द संगठित है।
  - सूचना युग और सामाजिक संरचनाओं, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर इसका प्रभाव।

- **5. भारतीय विचारक:**
  - **एम.के. गांधी:** उनके सामाजिक-राजनीतिक और नैतिक विचारों पर ध्यान दें : स्वराज (स्व-शासन, आत्म-नियंत्रण), सर्वोदय (सभी का कल्याण), सत्याग्रह (सत्य बल, अहिंसक प्रतिरोध), ट्रस्टीशिप (आर्थिक न्याय), और आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की उनकी आलोचना।
  - **बीआर अंबेडकर:** जाति व्यवस्था के उनके आलोचनात्मक विश्लेषण और जाति के उन्मूलन के उनके आह्वान का अध्ययन करें । सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, बौद्ध धर्म के लिए उनकी वकालत और भारतीय संविधान के प्रारूपण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर उनके विचारों को समझें।
  - **राधा कमल मुखर्जी:** भारत में समाजशास्त्र की स्थापना में उनके योगदान , समग्र और अंत:विषयक दृष्टिकोण पर उनके जोर तथा सामाजिक पारिस्थितिकी , मूल्यों और व्यक्तित्व पर उनके कार्य को समझें।
  - **जीएस घुर्ये :** उनके व्यापक योगदान का अध्ययन करें , जिन्हें अक्सर भार तीय समाजशास्त्र में "पितामह" माना जाता है। भारत में जाति और नस्ल , जनजातियों ("पिछड़े हिंदुओं" के रूप में), भारतीय शहरों, संस्कृति और भारतीय समाज के अध्ययन में उनके इंडोलॉजिकल और तुलनात्मक दृष्टिकोण पर उनके काम पर ध्यान दें।
  - **एमएन श्रीनिवास:** क्षेत्र अध्ययन से प्राप्त उनके प्रमुख वैचारिक योगदानों पर ध्यान केंद्रित करें : संस्कृतिकरण (प्रमुख/उच्च जातियों के रीति-रिवाजों का अनुकरण करके ऊपर की ओर गतिशीलता की प्रक्रिया), पश्चिमीकरण (ब्रिटिश शासन और पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव), प्रमुख जाति (स्थानीय क्षेत्र में संख्या त्मक शक्ति, आर्थिक और राजनीतिक शक्ति वाली जाति), और ग्राम अध्ययन पर उनका जोर।
  - **इरावती कर्वे:** भारत में नातेदारी संगठन पर उनके महत्वपूर्ण कार्य , भाषाई क्षेत्रों के उनके विश्लेषण और पाठ्य और क्षेत्र -आधारित अनुसंधान को एकीकृत करने वाले उनके मानवशास्त्रीय दृष्टि कोण को समझें।

अध्ययन कैसे करें (प्रभावी एवं विस्तृत रणनीतियाँ):

- **विचारक-अवधारणा-पुस्तक मैट्रिक्स:** प्रत्येक समाजशास्त्री के लिए, कॉलम के साथ एक मैट्रिक्स बनाएं: विचारक, मुख्य अवधारणाएँ/सिद्धांत, प्रमुख कार्य (पुस्तकें/लेख), विचारधारा/परिप्रेक्ष्य, और उनके मुख्य तर्क या योगदान का संक्षिप्त सारांश। यह त्वरित संशोधन और तुलना में मदद करता है।

- **तुलनात्मक विश्लेषण:**
  - सामाजिक परिवर्तन, धर्म, पूंजीवाद और कार्यप्रणाली जैसे प्रमुख मुद्दों पर शास्त्रीय विचारकों (मार्क्स, वेबर, दुर्खीम) के विचारों की तुलना और विरोधाभास करें।
  - संरचना-कार्यात्मकता (पार्सन्स, मेर्टन) और संरचनावाद (लेवी-स्ट्रॉस) के बीच अंतर स्पष्ट करें।
  - विभिन्न व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों (प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, घटना विज्ञान, नृवंशविज्ञान) की तुलना करें।
  - आधुनिकतावादी सिद्धांतों की तुलना उत्तरआधुनिकतावादी/उत्तरसंरचनावादी आलोचनाओं से करें।
- **"वादों" को समझना :** कार्यात्मकता, संरचनावाद, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद , परिघटना विज्ञान , नृवंशविज्ञान, उत्तरआधुनिकतावाद, उत्तरसंरचनावाद और उत्तरउपनिवेशवाद के बीच स्पष्ट रूप से परिभाषित और अंतर करें। उनकी मुख्य धारणाओं और अन्य दृष्टिकोणों की आलोचनाओं पर ध्यान दें।
- **मूल पाठ (अंश):** यदि संभव हो तो , प्रमुख विचारकों के मूल कार्यों से संक्षिप्त अंश पढ़ें (उदाहरण: सामाजिक तथ्यों पर डर्कहेम , नौकरशाही पर वेबर , वर्ग संघर्ष पर मार्क्स , मोटे विवरण पर गीर्टज़ , ओरिएंटलिज्म पर सईद)। यह केवल सारांशों पर निर्भर रहने की तुलना में अधिक गहरी समझ प्रदान करता है।
- **अवधारणाओं का अनुप्रयोग:** समाजशास्त्रीय अवधारणाओं को समकालीन सामाजिक मुद्दों या रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर लागू करने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए , मर्टन की एनोमी की अवधारणा कुछ प्रकार के विचलन को कैसे समझा सकती है ? गोफ़मैन का नाटकीय दृष्टिकोण सामाजिक मीडिया इंटरैक्शन का विश्लेषण कैसे कर सकता है ? शक्ति/ज्ञान पर फूकॉल्ट के विचार शैक्षणिक संस्थानों पर कैसे लागू होते हैं?
- **भारतीय विचारक – संदर्भ और योगदान:**
  - विशिष्ट भारतीय सामाजिक संदर्भ (उपनिवेशवाद, जाति व्यवस्था, राष्ट्र निर्माण) को समझें जिसने गांधी, अंबेडकर, घुर्ये, श्रीनिवास आदि के विचारों को आकार दिया।
  - भारतीय समाज को समझने के लिए उनके द्वारा विकसित की गई अनूठी अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करें (उदाहरण: संस्कृतीकरण, प्रमुख जाति)।
  - भारतीय समाज के अध्ययन के लिए उनके दृष्टिकोण की तुलना करें (उदाहरण: घुर्ये का इंडोलोजिकल बनाम श्रीनिवास का क्षेत्र-आधारित संरचनात्मक-कार्यात्मकतावाद)।
- **आरेख और प्रवाह चार्ट:** पार्सन्स की AGIL योजना या बौर्डियू के सिद्धांत (हैबिटस, फील्ड, कैपिटल) में अवधारणाओं के बीच संबंधों जैसे जटिल मॉडलों को चित्रित करने के लिए आरेखों का उपयोग करें।
- **आलोचनात्मक सहभागिता:** सिद्धांतों को सिर्फ़ याद न करें। उनकी ताकत , कमज़ोरियों और अन्य समाजशास्त्रियों द्वारा उनके खिलाफ़ की गई आलोचनाओं को समझें। उदाहरण के लिए , संघर्ष

सिद्धांतकारों द्वारा कार्या त्मकता की आलोचना , या उत्तर आधुनिकतावादियों द्वारा भव्य आख्यानों की आलोचना।

- **समाजशास्त्रीय शब्दों की शब्दावली :** विभिन्न सिद्धांतकारों द्वारा प्रस्तुत सभी प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं की एक व्यापक शब्दावली विकसित करें।

यूनिट 1 के लिए परीक्षा टिप्स (एमसीक्यू फोकस):

- **विचारकों को अवधारणाओं/पुस्तकों से मिलाना (बहुत उच्च उपज):** यह सबसे आम प्रकार का प्रश्न है। मिलान करने में सक्षम हो:
  - दुर्खीम के साथ सामाजिक तथ्य , अराजकता, पवित्र/अपवित्र, श्रम विभाजन, आत्महत्या , धार्मिक जीवन के प्रारंभिक रूप ।
  - वेबर, सामाजिक कार्य, आदर्श प्रकार, वेरस्टेन, प्रोटेस्टेंट नैतिकता, नौकरशाही, प्राधिकरण प्रकार, वर्ग / स्थिति / पार्टी, प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना ।
  - मार्क्स के साथ ऐतिहासिक भौतिकवाद , वर्ग संघर्ष, अलगाव, अधिशेष मूल्य, उत्पादन के तरीके, दास कैपिटल , कम्युनिस्ट घोषणापत्र ।
  - पार्सन्स विद एजीआईएल, सोशल सिस्टम, पैटर्न वेरिएबल्स।
  - मेर्टन विद मैनिफेस्ट/लेटेंट फंक्शन्स, एनोमी, मिडिल-रेंज थ्योरी।
  - लेवी-स्ट्रॉस संरचनावाद, मिथक विश्लेषण, नातेदारी संरचनाओं के साथ।
  - मीड के साथ प्रतीकात्मक अंत:क्रियावाद, स्व (मैं/मुझे), सामान्यीकृत अन्य।
  - गोफमैन विद ड्रामाटर्जी, प्रेजेंटेशन ऑफ सेल्फ।
  - फौकॉल्ट, शक्ति/ज्ञान, प्रवचन, अनुशासन के साथ।
  - बौर्डियू विद हैबिटस, कैपिटल (सांस्कृतिक, सामाजिक, आदि), फील्ड।
  - ओरिएंटलिज्म के साथ कहा.
  - सत्याग्रह, सर्वोदय, ट्रस्टीशिप वाले गांधी।
  - अम्बेडकर के साथ जाति का विनाश, हिंदू धर्म की आलोचना।
  - श्रीनिवास, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, प्रभुत्वशाली जाति।
  - घुर्ये ने जाति, नस्ल और जनजातियों को "पिछड़े हिन्दू" बताया।
  - कर्वे भारत में किन्शिप संगठन के साथ जुड़े थे।
- **संकल्पनात्मक स्पष्टता:** प्रश्न प्रमुख समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के सटीक अर्थ की आपकी समझ का परीक्षण करेंगे (उदाहरण: "दुर्खाइम का 'सामाजिक तथ्य' से क्या तात्पर्य था?")।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **विचारधाराओं की पहचान करना:** विचारकों को उनके संबंधित विचारधाराओं में वर्गीकृत करने में सक्षम होना (उदाहरण: कार्यात्मकतावाद, संघर्ष सिद्धांत, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, उत्तर आधुनिकतावाद)।
- **कालानुक्रमिक क्रम (कम सामान्य, लेकिन संभव):** कभी-कभी, आपसे प्रमुख सैद्धांतिक परंपराओं या विचारकों को उनके उद्भव के ऐतिहासिक क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहा जा सकता है।
- **"अभिकथन-तर्क" प्रश्न:** ये किसी सिद्धांत के भीतर विभिन्न अवधारणाओं या किसी विचारक द्वारा दिए गए तर्कों के बीच संबंधों की गहन समझ का परीक्षण करते हैं।
- **प्रमुख तर्कों/सिद्धांतों की पहचान करना:** प्रश्नों में एक कथन प्रस्तुत किया जा सकता है और पूछा जा सकता है कि कौन सा समाजशास्त्री उस तर्क से सबसे अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है (उदाहरण: "यह विचार कि धर्म सामान्य मूल्यों की पुष्टि करके समाज को एकीकृत करने का काम करता है , किसके कार्य का केंद्र है...?")।
- **भारतीय विचारक – विशिष्ट योगदान :** भारतीय समाज का विश्लेषण करने के लिए भारतीय समाजशास्त्रियों द्वारा विकसित अद्वितीय अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करें।
- **समान अवधारणाओं में अंतर करना :** उदाहरण के लिए, मेर्टन के एनोमी और दुर्खीम के एनोमी , या विभिन्न प्रकार के प्राधिकरण (वेबर) के बीच अंतर को स्पष्ट रूप से समझें।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year
- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend
- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect –SOCIOLOGY

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

समाजशास्त्र ई-पुस्तिका INDEX

इकाई-1: समाजशास्त्रीय सिद्धांत

1. **शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ**
   - एमाइल दुर्खीम
   - मैक्स वेबर
   - काल मार्क्स

2. **संरचना- कार्यात्मकतावाद और संरचनावाद**
   - ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की
   - एआर रैडक्लिफ़- ब्राउन
   - टैल्कॉट पार्सन्स
   - रॉबर्ट के. मेर्टन
   - क्लाउड लेवी स्ट्रॉस

3. **हेर्मेनेयुटिक और व्याख्यात्मक परंपराएँ**
   - जीएच मीड
   - कार्ल मैनहेम
   - अल्फ्रेड शुट्ज़
   - हेरोल्ड गारफिंकेल
   - एर्विंग गोफ़मैन
   - क्लिफोर्ड गीर्ट्ज़

4. **उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तर संरचनावाद और उत्तर उपनिवेशवाद**

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- एडवर्ड सईद
- पियरे बौर्डियू
- मिशेल फूको
- जुर्गेन हेबरमास
- एंथनी गिडेंस
- मैनुअल कास्टेल्स

5. **भारतीय विचारक**
   - एम.के. गांधी
   - बी.आर. अंबेडकर
   - राधा कमल मुखर्जी
   - जी.एस.घुर्ये
   - एमएन श्रीनिवास
   - इरावती कर्वे

इकाई-2: अनुसंधान पद्धति और तरीके

1. **सामाजिक वास्तविकता की संकल्पना**
   - विज्ञान का दर्शन
   - सामाजिक विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति और ज्ञानमीमांसा
     - वैज्ञानिक विधि
     - सामाजिक विज्ञान में ज्ञानमीमांसा
   - हेर्मेनेयुटिक परंपराएं
   - सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता और प्रतिबिम्बिता
     - सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता
     - सामाजिक विज्ञान में रिफ्लेक्सिविटी
   - नैतिकता और राजनीति

- सामाजिक विज्ञान में नैतिकता
- सामाजिक विज्ञान में राजनीति

2. **अनुसंधान डिजाइन तैयार करना**
   - सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, डेटा और दस्तावेज़ पढ़ना
     - सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पढ़ना
     - डेटा पढ़ना
     - दस्तावेज़ पढ़ना
   - आगमन और निगमन
     - प्रेरण
     - कटौती
   - तथ्य, अवधारणा और सिद्धांत
     - तथ्य
     - अवधारणा
     - लिखित
   - परिकल्पनाएँ, शोध प्रश्न, उद्देश्य
     - परिकल्पना
     - अनुसंधान प्रश्न
     - उद्देश्य

3. **मात्रात्मक और गुणात्मक विधियाँ**
   - नृवंशविज्ञान
   - सर्वेक्षण विधि
   - ऐतिहासिक विधि
   - तुलनात्मक विधि

4. TECHNIQUES

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- सैम्पलिंग
- प्रश्नावली और अनुसूची
  - प्रश्नावली
  - अनुसूची
- सांख्यिकीय विश्लेषण
- अवलोकन, साक्षात्कार और केस अध्ययन
  - अवलोकन
  - साक्षात्कार
  - केस स्टडी
- व्याख्या, डेटा विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन
  - व्याख्या
  - डेटा विश्लेषण
  - रिपोर्ट लेखन

इकाई-3: मूल अवधारणाएँ और संस्थाएँ

1. **समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ**
   - सामाजिक संरचना
   - संस्कृति
   - नेटवर्क
   - स्थिति और भूमिका
     - स्थिति
     - भूमिका
   - पहचान
   - समुदाय
   - प्रवासी
   - मूल्य, मानदंड और नियम

- मान
- मानदंड
- नियम

- व्यक्तित्व, आदत और एजेंसी
  - पर्सनहुड
  - आदत
  - एजेंसी
- नौकरशाही, शक्ति और अधिकार
  - नौकरशाही
  - शक्ति
  - अधिकार

2. **सामाजिक संस्थाएँ**
   - विवाह, परिवार और रिश्तेदारी
     - शादी
     - परिवार
     - समानता
   - अर्थव्यवस्था
   - राजनीति
   - धर्म
   - शिक्षा
   - कानून और रीति-रिवाज
     - कानून
     - प्रथाएँ

3. **सामाजिक संतुष्टि**
   - सामाजिक अंतर, पदानुक्रम, असमानता और हाशिए पर होना

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- सामाजिक अंतर
- पदानुक्रम
- असमानता
- उपेक्षा

- जाति और वर्ग
  - जाति
  - कक्षा
- लिंग, कामुकता और विकलांगता
  - लिंग
  - लैंगिकता
  - विकलांगता
- जाति, जनजाति और जातीयता
  - दौड़
  - जनजाति
  - जातीयता

4. **सामाजिक परिवर्तन और प्रक्रियाएँ**

- विकास और प्रसार
  - विकास
  - प्रसार
- आधुनिकीकरण और विकास
  - आधुनिकीकरण
  - विकास
- सामाजिक परिवर्तन और वैश्वीकरण
  - सामाजिक परिवर्तन
  - भूमंडलीकरण
- सामाजिक गतिशीलता

यूनिट-4: ग्रामीण और शहरी परिवर्तन

1. **ग्रामीण एवं किसान समाज**
   - जाति-जनजाति बस्तियाँ
   - कृषि सामाजिक संरचना और उभरते वर्ग संबंध
     - कृषि सामाजिक संरचना
     - उभरते वर्ग संबंध
   - भूमि स्वामित्व और कृषि संबंध
     - भूमि का स्वामित्व
     - कृषि संबंध
   - कृषि अर्थव्यवस्था में गिरावट, किसानीकरण में कमी और पलायन
     - कृषि अर्थव्यवस्था का पतन
     - गैर-किसानीकरण
     - प्रवास
   - कृषि अशांति और किसान आंदोलन
     - कृषि अशांति
     - किसान आंदोलन
   - अंतर-सामुदायिक संबंधों और हिंसा में परिवर्तन
     - अंतर-समुदाय संबंधों में परिवर्तन
     - हिंसा

2. **शहरी समाज**
   - शहरीकरण, शहरीपन और शहरीकरण
     - शहरीकरण
     - शहरीपन
     - शहरीकरण

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- कस्बे, नगर और महानगर
  - कस्बों
  - शहर
  - बड़े शहरों
- उद्योग, सेवा और व्यवसाय
  - उद्योग
  - सेवा
  - व्यापार
- पड़ोस, मलिन बस्तियाँ और जातीय बस्तियाँ
  - अड़ोस-पड़ोस
  - मलिन बस्तियों
  - जातीय परिक्षेत्र
- मध्यम वर्ग और गेटेड समुदाय
  - मध्य वर्ग
  - गेटेड समुदाय
- शहरी आंदोलन और हिंसा
  - शहरी आंदोलन
  - हिंसा (शहरी संदर्भ में)

इकाई-5: राज्य, राजनीति और विकास

1. **भारत में राजनीतिक प्रक्रियाएँ**
   - जनजाति, राष्ट्र राज्य और सीमा
     - जनजाति
     - राष्ट्र राज्य
     - सीमा
   - नौकरशाही

- शासन और विकास
  - शासन
  - विकास
- सार्वजनिक नीति: स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका
  - स्वास्थ्य के लिए सार्वजनिक नीति
  - शिक्षा के लिए सार्वजनिक नीति
  - आजीविका के लिए सार्वजनिक नीति
- राजनीतिक संस्कृति
- जमीनी स्तर पर लोकतंत्र
- कानून और समाज
- लिंग और विकास
- भ्रष्टाचार
- अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठनों की भूमिका

2. **सामाजिक आंदोलन और विरोध प्रदर्शन**

- राजनीतिक गुट, दबाव समूह
  - राजनीतिक गुट
  - प्रेशर ग्रुप्स
- जाति, जातीयता, विचारधारा, लिंग, विकलांगता, धर्म और क्षेत्र पर आधारित आंदोलन
  - जाति आधारित आंदोलन
  - जातीयता पर आधारित आंदोलन
  - विचारधारा पर आधारित आंदोलन
  - लिंग आधारित आंदोलन
  - विकलांगता पर आधारित आंदोलन
  - धर्म पर आधारित आंदोलन
  - क्षेत्र आधारित आंदोलन
- नागरिक समाज और नागरिकता

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

    - नागरिक समाज
    - सिटिज़नशिप
  - एनजीओ, सक्रियता और नेतृत्व
    - गैर सरकारी संगठनों
    - सक्रियतावाद
    - नेतृत्व
  - आरक्षण और राजनीति

इकाई-6: अर्थव्यवस्था और समाज

- विनिमय, उपहार, पूंजी, श्रम और बाजार
  - अदला-बदली
  - उपहार
  - पूंजी
  - श्रम
  - बाज़ार
- उत्पादन के तरीके पर बहस
- संपत्ति और संपत्ति संबंध
- राज्य और बाज़ार: कल्याणवाद और नवउदारवाद
  - राज्य और बाजार
  - कल्याणवाद
- आर्थिक विकास के मॉडल
- गरीबी और बहिष्कार
- कारखाना और उद्योग प्रणालियाँ
- श्रम संबंधों की बदलती प्रकृति
- लिंग और श्रम प्रक्रिया
- व्यवसाय और परिवार

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- डिजिटल अर्थव्यवस्था, ई-कॉमर्स
  - डिजिटल अर्थव्यवस्था
  - ई-कॉमर्स
- वैश्विक व्यापार और कॉर्पोरेट्स
- पर्यटन
- उपभोग

इकाई-7: पर्यावरण और समाज

- सामाजिक और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी: विविध रूप
  - सामाजिक पारिस्थितिकी
  - सांस्कृतिक पारिस्थितिकी (विविध रूप)
- तकनीकी परिवर्तन, कृषि और जैव विविधता
  - तकनीक संबंधी परिवर्तन
  - कृषि
  - जैव विविधता
- स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ और नृजातीय चिकित्सा
  - स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ
  - एथनो-मेडिसिन
- लिंग और पर्यावरण
- वन नीतियां, आदिवासी और बहिष्कार
  - वन नीतियाँ
  - आदिवासी और बहिष्कार
- पारिस्थितिक क्षरण और प्रवास
  - पारिस्थितिक क्षरण
  - प्रवासन (पारिस्थितिक कारकों के कारण)
- विकास, विस्थापन और पुनर्वास

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- विकास (पर्यावरण के संदर्भ में)
- विस्थापन (विकास/पर्यावरणीय कारकों के कारण)
- पुनर्वास

- जल और सामाजिक बहिष्कार
- आपदाएँ और सामुदायिक प्रतिक्रियाएँ
  - आपदाओं
  - आपदाओं के प्रति सामुदायिक प्रतिक्रियाएँ
- पर्यावरण प्रदूषण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और विकलांगता
  - पर्यावरण प्रदूषण
  - सार्वजनिक स्वास्थ्य (पर्यावरण से संबंधित)
  - विकलांगता (पर्यावरण से संबंधित)
- जलवायु परिवर्तन और अंतर्राष्ट्रीय नीतियां
  - जलवायु परिवर्तन
  - जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय नीतियां
- पर्यावरण आंदोलन

इकाई-8: परिवार, विवाह और रिश्तेदारी

- सैद्धांतिक दृष्टिकोण: संरचना-कार्यात्मक, गठबंधन और सांस्कृतिक
  - संरचना-कार्यात्मक दृष्टिकोण
  - गठबंधन सिद्धांत दृष्टिकोण
  - सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- लिंग संबंध और शक्ति गतिशीलता
- विरासत, उत्तराधिकार और अधिकार
  - विरासत
  - उत्तराधिकार
  - अधिकार (परिवार/रिश्तेदारी के भीतर)

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

- लिंग, कामुकता और प्रजनन
  - लिंग (परिवार/रिश्तेदारी के भीतर)
  - लैंगिकता (परिवार/रिश्तेदारी के भीतर)
  - प्रजनन
- बच्चे, युवा और बुजुर्ग
  - बच्चे (पारिवारिक संदर्भ में)
  - युवा (पारिवारिक संदर्भ में)
  - बुजुर्ग (पारिवारिक संदर्भ में)
- भावनाएँ और परिवार
- परिवार के उभरते स्वरूप
- बदलती विवाह प्रथाएँ
- बदलती देखभाल और सहायता प्रणालियाँ
- पारिवारिक कानून
- घरेलू हिंसा और महिलाओं के विरुद्ध अपराध
  - घरेलू हिंसा
  - महिलाओं के विरुद्ध अपराध (पारिवारिक संदर्भ में)
- सम्मान रक्षा हेतु हत्या

इकाई-9: विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज

- तकनीकी विकास का इतिहास
- समय और स्थान की बदलती धारणाएँ
- प्रवाह और सीमाएँ
- आभासी समुदाय
- मीडिया: प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक, दृश्य और सोशल मीडिया
  - मुद्रण माध्यम
  - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

  - दृश्य मीडिया
  - सोशल मीडिया
- ई-गवर्नेंस और निगरानी सोसायटी
  - ई-शासन
  - निगरानी सोसायटी
- प्रौद्योगिकी और उभरती राजनीतिक प्रक्रियाएँ
- राज्य नीति, डिजिटल विभाजन और समावेशन
  - राज्य नीति (प्रौद्योगिकी पर)
  - डिजिटल विभाजन
  - समावेशन (डिजिटल)
- प्रौद्योगिकी और बदलते पारिवारिक रिश्ते
- प्रौद्योगिकी और बदलती स्वास्थ्य प्रणालियाँ
- खाद्य एवं प्रौद्योगिकी
- साइबर अपराध

इकाई-10: संस्कृति और प्रतीकात्मक परिवर्तन

- संकेत और प्रतीक
- अनुष्ठान, विश्वास और प्रथाएँ
  - रिवाज
  - मान्यताएं
  - आचरण
- बदलती भौतिक संस्कृति
- नैतिक अर्थव्यवस्था
- शिक्षा: औपचारिक और अनौपचारिक
  - औपचारिक शिक्षा
  - अनौपचारिक शिक्षा

- धार्मिक संगठन, धर्मपरायणता और आध्यात्मिकता
  - धार्मिक संगठन
  - शील
  - आध्यात्मिकता
- अनुष्ठानों का वस्तुकरण
- सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता
  - सांप्रदायिकता
  - धर्मनिरपेक्षता
- सांस्कृतिक पहचान और लामबंदी
  - सांस्कृतिक पहचान
  - सांस्कृतिक गतिशीलता
- संस्कृति और राजनीति
- लिंग, शरीर और संस्कृति
  - लिंग और संस्कृति
  - शरीर और संस्कृति
- कला और सौंदर्यशास्त्र
  - कला
  - सौंदर्यशास्त्र
- नैतिकता और सदाचार
  - नीति
  - नैतिकता
- खेल और संस्कृति
- तीर्थयात्रा और धार्मिक पर्यटन
  - तीर्थ यात्रा
  - धार्मिक पर्यटन
- धर्म और अर्थव्यवस्था
- संस्कृति और पर्यावरण

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- नये धार्मिक आंदोलन

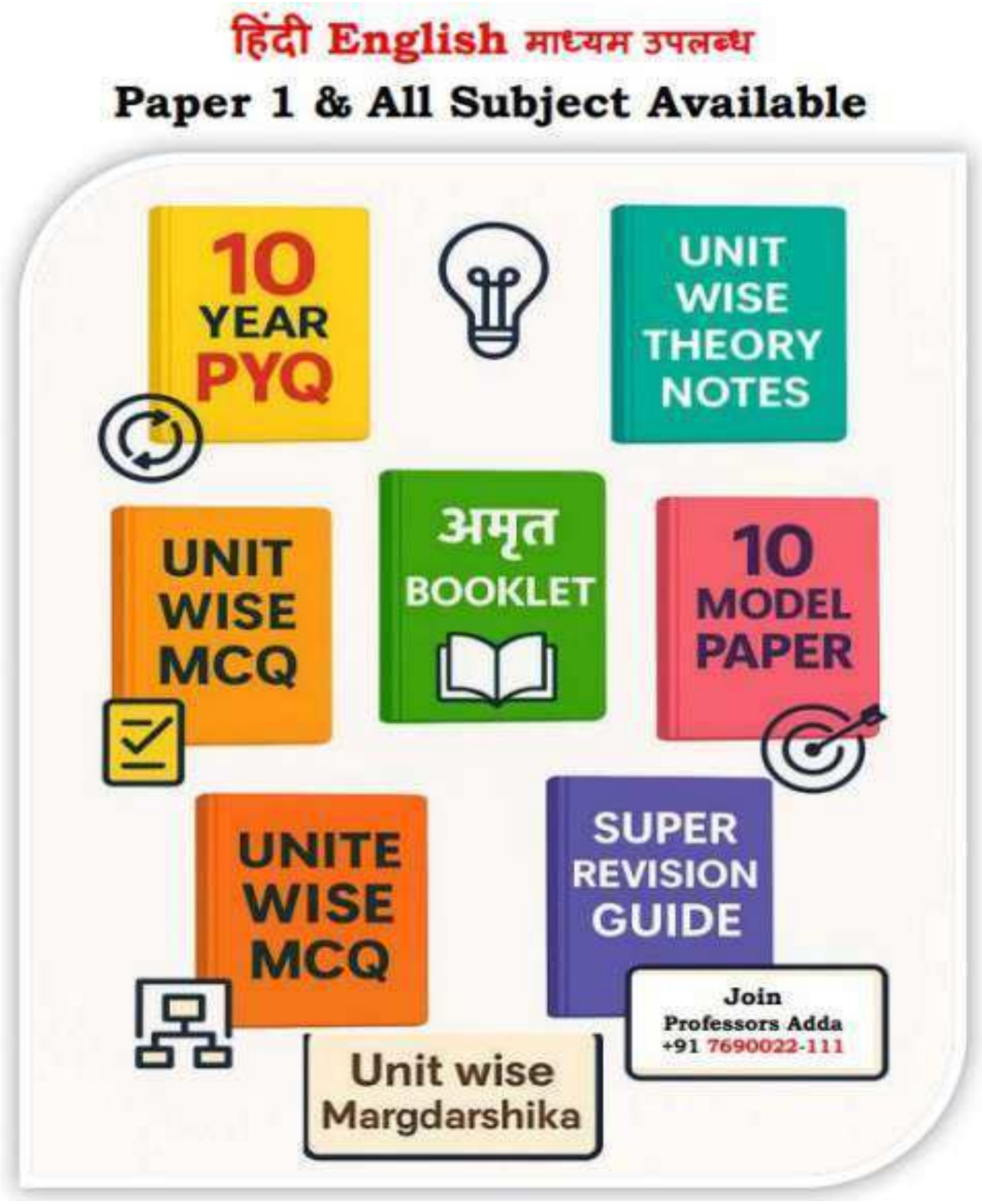

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year
- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend
- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

यूजीसी-नेट यूनिट-1 समाजशास्त्र ई-बुकलेट Sample

2. संरचना-कार्यात्मकता और संरचनावाद

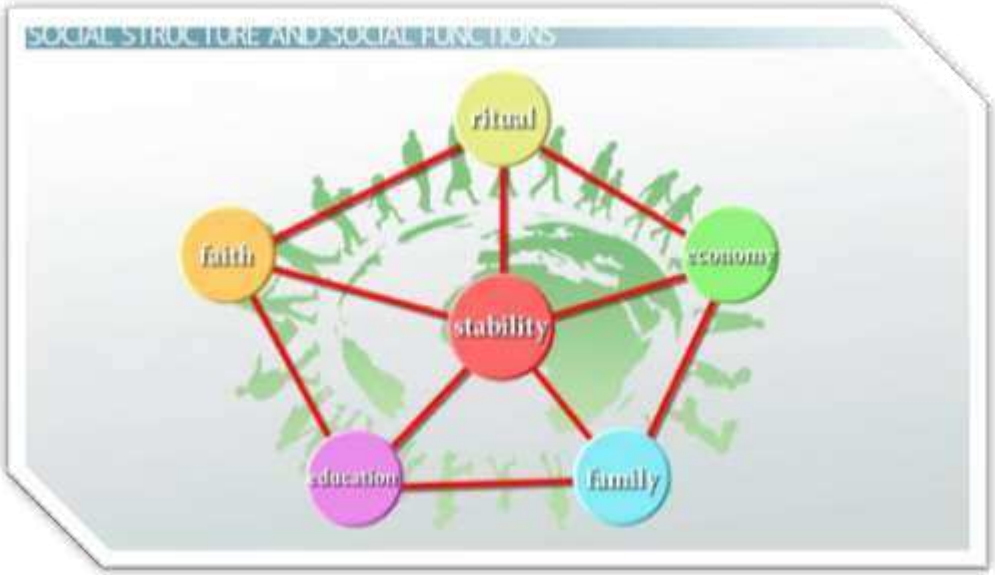

ये परंपराएं समाज को परस्पर जुड़े भागों की एक प्रणाली के रूप में समझने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ उभरीं, जहां प्रत्येक भाग समग्र स्थिरता और संतुलन बनाए रखने के लिए एक विशिष्ट कार्य करता है।

संरचनावाद, यद्यपि अलग है, तथापि अंतर्निहित, प्रायः छिपी हुई संरचनाओं पर जोर देता है जो सामाजिक जीवन और अर्थ को व्यवस्थित करती हैं।

- **ब्रोनिस्लाव मालिनोव्स्की (1884-1942)**

संदर्भ और योगदान: पोलिश मानवविज्ञानी, मालिनोव्स्की को मानव विज्ञान में **कार्यात्मकता के अग्रदूतों में से एक और गहन सहभागी अवलोकन क्षेत्र कार्य** के प्रवर्तक

माना जाता है । उन्होंने तर्क दिया कि सांस्कृतिक संस्थाएँ और प्रथाएँ मुख्य रूप से व्यक्तियों की जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्य करती हैं।

○ महत्वपूर्ण अवधारणाएं:

- **व्यक्तिगत आवश्यकता कार्यात्मकतावाद:** उनका मुख्य विचार यह था कि सांस्कृतिक लक्षण और सामाजिक संस्थाएं इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि वे समाज के भीतर व्यक्तियों की विशिष्ट जैविक या मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं (उदाहरण: भोजन, आश्रय, सुरक्षा, प्रजनन)।
- **सहभागी अवलोकन:** एक क्रांतिकारी नृवंशविज्ञान पद्धति जिसमें शोधकर्ता एक विस्तारित अवधि के लिए अध्ययन किए जा रहे समुदाय के दैनिक जीवन में खुद को डुबो देता है, उनकी भाषा, रीति-रिवाजों और दृष्टिकोणों को सीखता है। इससे गहरी, समग्र समझ विकसित होती है।
- **कुला रिंग:** ट्रोब्रिएंड द्वीपवासियों के बीच औपचारिक आदान-प्रदान प्रणाली पर उनका क्लासिक अध्ययन, जिसमें दिखाया गया कि कैसे "तर्कहीन" प्रथाएं महत्वपूर्ण सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कार्य करती हैं, जैसे संबंध और स्थिति स्थापित करना।
- **बुनियादी, साधनात्मक और एकीकृत आवश्यकताएं:** उन्होंने आवश्यकताओं को वर्गीकृत किया: **बुनियादी आवश्यकताएं** (जैविक, उदाहरण पोषण, प्रजनन); **साधनात्मक आवश्यकताएं** (बुनियादी आवश्यकताओं से प्राप्त, उदाहरण अर्थव्यवस्था, कानून, बुनियादी जरूरतों के लिए समाज को व्यवस्थित करने के लिए शिक्षा); और **एकीकृत आवश्यकताएं** (प्रतीकात्मक, उदाहरण जादू, धर्म, जो सामंजस्य और अर्थ प्रदान करती हैं)।

○ परीक्षा के लिए प्रमुख पुस्तकें

- **अर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक** (1922): कुला रिंग का उनका अभूतपूर्व नृवंशविज्ञान विवरण, जिसमें सहभागी अवलोकन की शक्ति का प्रदर्शन किया

गया।

- **संस्कृति का वैज्ञानिक सिद्धांत और अन्य निबंध** (1944): कार्यात्मकता के उनके सैद्धांतिक ढांचे को रेखांकित करने वाला मरणोपरांत संग्रह।

पुस्तक का शीर्षक	प्रकाशन वर्ष
ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के बीच परिवार एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	1913
पश्चिमी प्रशांत महासागर के अर्गोनॉट्स	1922
जंगली समाज में अपराध और प्रथा	1926
आदिम मनोविज्ञान में मिथक	1926
बर्बर समाज में सेक्स और दमन	1927
उत्तर-पश्चिमी मेलानेशिया में असभ्य लोगों का यौन जीवन	1929
कोरल गार्डन और उनका जादू (2 खंड)	1935
संस्कृति का वैज्ञानिक सिद्धांत और अन्य निबंध (मरणोपरांत)	1944
संस्कृति परिवर्तन की गतिशीलता (मरणोपरांत)	1945
जादू, विज्ञान और धर्म तथा अन्य निबंध (मरणोपरांत)	1948
शब्द के सख्त अर्थ में एक डायरी (मरणोपरांत)	1967

• ए.आर. रैडक्लिफ़-ब्राउन (1881-1955)

संदर्भ और योगदान: ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञानी, रैडक्लिफ-ब्राउन ने **संरचनात्मक कार्यात्मकता विकसित की** , जो मालिनोव्स्की के कार्यात्मकता से अलग है। उन्होंने इस

बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे सामाजिक संरचनाएं (जैसे रिश्तेदारी प्रणाली, राजनीतिक संस्थाएं) व्यक्तिगत जरूरतों के बजाय संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव और स्थिरता में योगदान करती हैं। उन्होंने "समाज का प्राकृतिक विज्ञान" बनाने की कोशिश की।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं:

- **संरचनात्मक कार्यात्मकता:** यह दृष्टिकोण कि सामाजिक संस्थाएँ और प्रथाएँ इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि वे समग्र सामाजिक संरचना और संतुलन को बनाए रखने में योगदान देती हैं। समाज को एक जीव के रूप में देखा जाता है जहाँ प्रत्येक भाग (संरचना) पूरे के लिए एक कार्य करता है।
- **सामाजिक संरचना:** समाज के भीतर स्थिर, पैटर्न वाले सामाजिक संबंधों का नेटवर्क (उदाहरण के लिए रिश्तेदारी, राजनीतिक संगठन)। उनका मानना था कि ये संरचनाएँ अनुभवजन्य रूप से देखी जा सकती हैं।
- **सामाजिक कार्य:** किसी संस्था या प्रथा द्वारा सामाजिक संरचना के रखरखाव में दिया जाने वाला योगदान। उदाहरण के लिए, रैडक्लिफ़-ब्राउन के लिए धर्म का कार्य सामाजिक सामंजस्य बनाए रखना था, न कि व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को पूरा करना।
- **सामाजिक सामंजस्य:** वह बंधन जो समाजों को एक साथ बांधे रखता है, जिसे विभिन्न सामाजिक संरचनाओं के कामकाज के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
- **तुलनात्मक विधि:** सामाजिक जीवन के सार्वभौमिक नियमों की पहचान करने के लिए विभिन्न समाजों की तुलना करने की वकालत की जाती है, जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञान नियमों की खोज करते हैं।

परीक्षा के लिए प्रमुख पुस्तकें

- **अंडमान द्वीपवासी** (1922): एक प्रारंभिक नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य जिसमें उनके संरचनात्मक कार्यात्मक दृष्टिकोण को लागू किया गया।
- **आदिम समाज में संरचना और कार्य** (1952): उनके संरचनात्मक कार्यात्मक

सिद्धांत और तुलनात्मक पद्धति पर विस्तार से प्रकाश डालने वाले निबंधों का संग्रह।

पुस्तक का शीर्षक/कार्य	प्रकाशन वर्ष
अंडमान द्वीपवासी	1922
ऑस्ट्रेलियाई जनजातियों का सामाजिक संगठन	1931
"मज़ाकिया रिश्तों पर" (प्रभावशाली निबंध)	1940
अफ्रीकी नातेदारी और विवाह प्रणालियाँ(डेरिल फ़ोर्ड के साथ संपादित)	1950
आदिम समाज में संरचना और कार्य(निबंध)	1952
समाज का प्राकृतिक विज्ञान(मरणोपरांत)	1957
सामाजिक नृविज्ञान में विधि(चयनित निबंध, मरणोपरांत)	1958

- **टैल्कॉट पार्सन्स (1902-1979)**

संदर्भ और योगदान: एक अमेरिकी समाजशास्त्री, पार्सन्स अमेरिकी संरचनात्मक कार्यात्मकता में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनका लक्ष्य एक भव्य, व्यापक सिद्धांत बनाना था जो सामाजिक क्रिया और सामाजिक प्रणालियों के सभी पहलुओं को समझा सके। उनके काम की विशेषता जटिल वैचारिक रूपरेखा है, विशेष रूप से AGIL योजना ।

- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं:**

- **ग्रैंड थ्योरी:** पार्सन्स ने एक सार्वभौमिक, व्यापक सैद्धांतिक ढांचा विकसित करने का प्रयास किया, जो विश्लेषण के सभी स्तरों पर सभी सामाजिक प्रणालियों को नियंत्रित करने वाले मौलिक सिद्धांतों की व्याख्या कर सके।
- **सामाजिक व्यवस्था:** पैटर्नबद्ध सामाजिक संबंधों, भूमिकाओं और संस्थाओं की एक जटिल व्यवस्था जो परस्पर क्रिया करती हैं और अन्योन्याश्रित होती हैं।
- **AGIL स्कीमा (या AGIL मॉडल):** कार्यात्मक पूर्वापेक्षाओं का विश्लेषण करने के लिए पार्सन्स का ढांचा, जिसे किसी भी सामाजिक व्यवस्था (एक छोटे समूह से लेकर पूरे समाज तक) को जीवित रहने और संतुलन बनाए रखने के लिए पूरा करना होगा:
  - **A - अनुकूलन:** प्रणाली की अपने पर्यावरण के अनुकूल ढलने और आवश्यक संसाधन (मुख्यतः आर्थिक संस्थाएं) प्राप्त करने की क्षमता।
  - **जी - लक्ष्य प्राप्ति:** प्रणाली की अपने प्राथमिक लक्ष्यों (मुख्यतः राजनीतिक संस्थाएं) को परिभाषित करने और प्राप्त करने की क्षमता।
  - **I - एकीकरण:** प्रणाली की विभिन्न इकाइयों के बीच संबंधों को समन्वित और विनियमित करने तथा संघर्ष (मुख्य रूप से कानूनी और धार्मिक संस्थाएं) का प्रबंधन करने की आवश्यकता।
  - **एल - विलंबता (या पैटर्न रखरखाव):** प्रणाली की अपने सांस्कृतिक पैटर्न, मूल्यों और मानदंडों को समय के साथ बनाए रखने और संचारित करने की क्षमता, सदस्यों (मुख्य रूप से परिवार, शिक्षा और सांस्कृतिक संस्थानों) से प्रतिबद्धता सुनिश्चित करना।
- **पैटर्न चर:** सामाजिक अंतःक्रियाओं में व्यक्तियों द्वारा सामना किए जाने वाले द्विभाजक विकल्प, किसी दिए गए समाज में प्रमुख मूल्यों को दर्शाते हैं। ये विकल्प सामाजिक संबंधों की प्रकृति को परिभाषित करते हैं (उदाहरण: भावनात्मकता बनाम भावनात्मक तटस्थता, आत्म-उन्मुखता बनाम सामूहिकता-उन्मुखता, सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद, आरोपण बनाम उपलब्धि, विशिष्टता बनाम फैलाव)। [1]
- **बीमार की भूमिका:** चिकित्सा समाजशास्त्र में उनके सिद्धांत का अनुप्रयोग, जिसमें

एक बीमार व्यक्ति की सामाजिक अपेक्षाओं और अधिकारों/जिम्मेदारियों का वर्णन किया गया है।

परीक्षा के लिए प्रमुख पुस्तकें

- **सामाजिक क्रिया की संरचना** (1937): दुर्खीम, वेबर, परेटो और मार्शल के सैद्धांतिक योगदान का विश्लेषण करने वाला एक व्याख्यात्मक कार्य, जो उनकी कार्रवाई के स्वैच्छिक सिद्धांत की ओर ले जाता है।
- **द सोशल सिस्टम** (1951): उनके संरचनात्मक कार्यात्मक सिद्धांत और एजीआईएल योजना का सबसे व्यापक विवरण।

वर्ग	विवरण
पूरा नाम	टैल्कॉट पार्सन्स
जन्म	13 दिसंबर, 1902, कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो, अमेरिका
मृत	8 मई, 1979, म्यूनिख, पश्चिम जर्मनी
राष्ट्रीयता	अमेरिकी
प्राथमिक क्षेत्र	समाज शास्त्र
अल्मा मेटर	एमहर्स्ट कॉलेज (बी.ए.)लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्सयूनिवर्सिटी ऑफ हीडलबर्ग (पी.एच.डी.)
प्रमुख संबद्धता	हार्वर्ड विश्वविद्यालय (1927-1973)
प्रमुख सिद्धांत एवं अवधारणाएँ	**संरचनात्मक कार्यात्मकता:** समाज को एक जटिल प्रणाली के रूप में देखता है जिसके भाग एकजुटता और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करते हैं ॥ **क्रिया सिद्धांत (सामाजिक क्रिया का स्वैच्छिक सिद्धांत):** सांस्कृतिक मानदंडों और सामाजिक संरचनाओं के ढांचे के भीतर व्यक्तियों द्वारा किए गए विकल्पों पर ध्यान केंद्रित करता है। **एजीआईएल प्रतिमान (योजना):** चार कार्यों का एक व्यवस्थित चित्रण, जो प्रत्येक सामाजिक प्रणाली को जीवित रहने के लिए करना चाहिए: अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण, विलंबता (पैटर्न रखरखाव) **पैटर्न चर:** द्विभाजित विकल्पों के सेट जो अभिनेता सामाजिक स्थितियों में सामना करते हैं (उदाहरण के लिए, प्रभावीता बनाम प्रभावी तटस्थता, सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद) **बीमार की भूमिका:** चिकित्सा समाजशास्त्र में एक अवधारणा जो बीमार व्यक्तियों की सामाजिक अपेक्षाओं और दायित्वों का वर्णन करती है। **सामाजिक प्रणाली:** व्यक्तियों और समूहों के बीच पैटर्न वाली बातचीत का एक जटिल नेटवर्क।
प्रमुख योगदान	यूरोपीय समाजशास्त्रीय विचार (विशेष रूप से वेबर और दुर्खीम) को अमेरिकी समाजशास्त्र में प्रस्तुत किया और उसकी व्याख्या की। विभिन्न सामाजिक विज्ञानों को एकीकृत करने के उद्देश्य से एक "भव्य सिद्धांत" विकसित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका में समाजशास्त्र को एक वैध शैक्षणिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने में मदद की। कई छात्रों को प्रभावित किया जो प्रमुख समाजशास्त्री बन गए।

प्रमुख प्रकाशन	*सामाजिक क्रिया की संरचना* (1937) *सामाजिक प्रणाली* (1951) *कार्रवाई के सामान्य सिद्धांत की ओर* (एडवर्ड ए. शिल्स एट अल. के साथ) (1951) *समाजशास्त्रीय सिद्धांत पर निबंध* (1949, संशोधित 1954) *अर्थव्यवस्था और समाज* (नील जे. स्मेलसर के साथ) (1956) *समाज: विकासवादी और तुलनात्मक दृष्टिकोण* (1966) *राजनीति और सामाजिक संरचना* (1969) *अमेरिकी विश्वविद्यालय* (गेराल्ड एम. प्लैट और नील जे. स्मेलसर के साथ) (1973)
आलोचनाओं	सिद्धांतों को अक्सर अत्यधिक अमूर्त और अनुभवजन्य रूप से परीक्षण करने में कठिन माना जाता है। उन पर रूढ़िवादी पूर्वाग्रह रखने का आरोप है, जो संघर्ष और परिवर्तन के बजाय सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनके कुछ विश्लेषणों में जातीय-केंद्रित दृष्टिकोण हैं।

• रॉबर्ट के. मेर्टन (1910-2003)

संदर्भ और योगदान: एक अमेरिकी समाजशास्त्री, मेर्टन पार्सन्स के छात्र थे, लेकिन उन्होंने "ग्रैंड थ्योरी" की आलोचना की, इसके बजाय **मध्यम श्रेणी के सिद्धांतों की वकालत की** । उन्होंने प्रकट और अव्यक्त कार्यों, शिथिलता और विसंगति (तनाव सिद्धांत) जैसी अवधारणाओं को पेश करके कार्यात्मकता को परिष्कृत किया, जिससे यह अनुभवजन्य शोध के लिए अधिक अनुकूल हो गया।

○ महत्वपूर्ण अवधारणाएं:

- **मध्य-श्रेणी के सिद्धांत:** वे सिद्धांत जो भव्य, व्यापक सिद्धांतों (जैसे पार्सन्स) और छोटी कार्यशील परिकल्पनाओं के बीच खड़े होते हैं। वे अनुभवजन्य शोध के माध्यम से परीक्षण योग्य होने के लिए पर्याप्त विशिष्ट होते हैं लेकिन विभिन्न सामाजिक घटनाओं पर लागू होने के लिए पर्याप्त व्यापक होते हैं।
- **प्रकट और अव्यक्त कार्य:** मेर्टन ने इनमें भेद किया:

- **प्रकट कार्य:** किसी सामाजिक प्रतिरूप या संस्था के इच्छित एवं मान्यता प्राप्त परिणाम।
- **अव्यक्त कार्य:** किसी सामाजिक पैटर्न या संस्था के अनपेक्षित और अक्सर अपरिचित परिणाम। (उदाहरण: शिक्षा का प्रकट कार्य कौशल सिखाना है; अव्यक्त कार्य बच्चों की देखभाल करना या सामाजिक नेटवर्क बनाना हो सकता है)।

- **शिथिलताएँ:** सामाजिक पैटर्न के परिणाम जो सामाजिक व्यवस्था के एकीकरण या स्थिरता को बाधित करते हैं। मेर्टन ने उल्लेख किया कि कार्य सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं।
- **एनोमी (तनाव सिद्धांत):** दुर्खीम का विस्तार करते हुए, मेर्टन ने विचलन को समझाने के लिए एनोमी का प्रयोग किया। उन्होंने तर्क दिया कि एनोमी तब होती है जब सांस्कृतिक रूप से परिभाषित लक्ष्यों (उदाहरण के लिए धन) और उन्हें प्राप्त करने के लिए उपलब्ध वैध साधनों के बीच विसंगति होती है, जिससे व्यक्ति विभिन्न तरीकों (अनुरूपता, नवाचार, कर्मकांड, पीछे हटना, विद्रोह) में अनुकूलन करने के लिए प्रेरित होता है।
- **स्व-पूर्ति भविष्यवाणी:** किसी स्थिति की गलत परिभाषा, जो एक नए व्यवहार को जन्म देती है, जो मूल रूप से गलत धारणा को सच बना देती है (उदाहरण के लिए, बैंक की शोधन क्षमता के बारे में एक झूठी अफवाह बैंक पर दौड़ लगा सकती है, जिससे बैंक वास्तव में विफल हो सकता है)।
- **संदर्भ समूह:** एक समूह जिसके साथ व्यक्ति स्वयं की तुलना करते हैं, जो अक्सर उनके दृष्टिकोण, व्यवहार और आत्म-मूल्यांकन को प्रभावित करता है।
- **भूमिका सेट:** भूमिका संबंधों का पूरक जिसमें व्यक्ति एक विशेष सामाजिक स्थिति पर कब्जा करने के आधार पर शामिल होते हैं (उदाहरण के लिए एक डॉक्टर का मरीजों, नर्सों, अस्पताल प्रशासकों, सहकर्मियों के साथ संबंध होता है)।

परीक्षा के लिए प्रमुख पुस्तकें

- **सामाजिक सिद्धांत और सामाजिक संरचना** (1949, संशोधित 1957, 1968):

उनका सबसे प्रभावशाली कार्य, जहाँ उन्होंने मध्य-सीमा सिद्धांत, प्रकट/अव्यक्त कार्यों और तनाव सिद्धांत पर अपने विचारों को स्पष्ट किया।

पुस्तक का शीर्षक	प्रकाशन वर्ष
सत्रहवीं सदी के इंग्लैंड में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज	1938
सामाजिक सिद्धांत और सामाजिक संरचना	1949 (संशोधित संस्करण 1957, 1968)
केंद्रित साक्षात्कार (मार्जोरी फिस्के और पेट्रीसिया एल. केंडल के साथ)	1956
दिग्गजों के कंधों पर: एक शांडेयन पोस्टस्क्रिप्ट	1965
सैद्धांतिक समाजशास्त्र पर	1967
विज्ञान का समाजशास्त्र: सैद्धांतिक और अनुभवजन्य जांच	1973
समाजशास्त्रीय द्वैधता और अन्य निबंध	1976
सामाजिक अनुसंधान और अभ्यासशील व्यवसाय	1982
सेरेन्डिपिटी की यात्राएँ और रोमांच(एलिनोर बार्बर के साथ)	2004 (मरणोपरांत प्रकाशित)

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

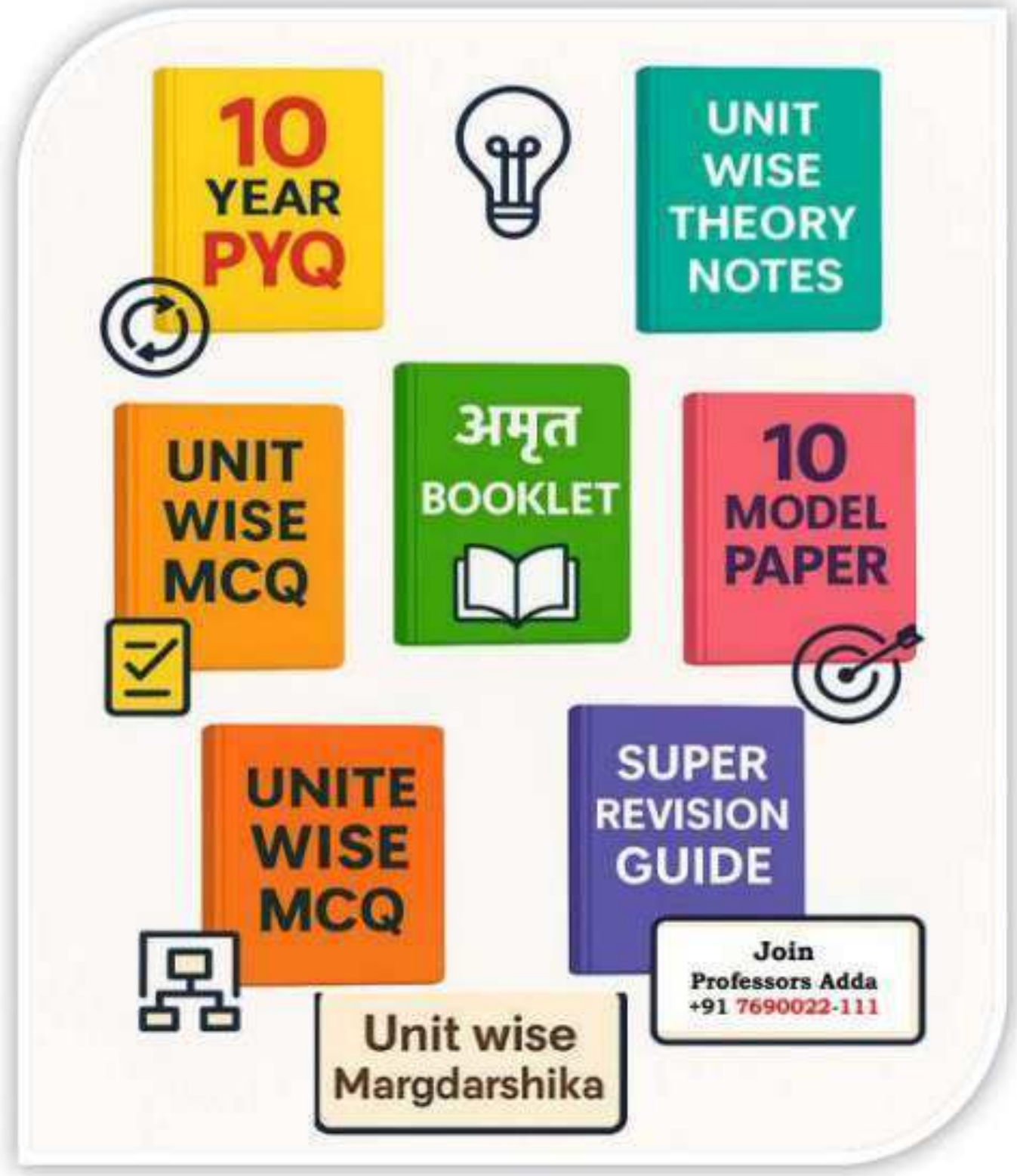

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

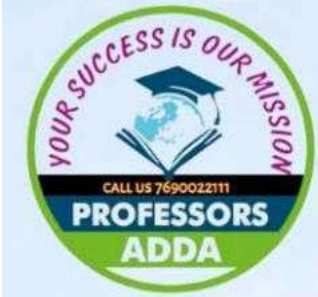

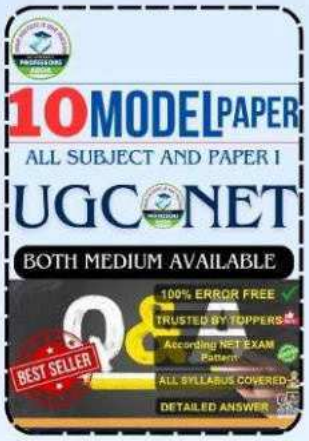

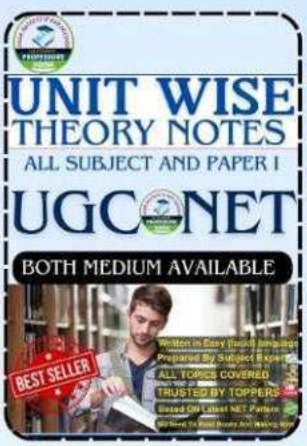

YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
BEST SELLER
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
PREMIUM
UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
Based ON UGC Authorised Answers KEY
VERIFIED
360 Guidance
360°
Highest Success Rate in India
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

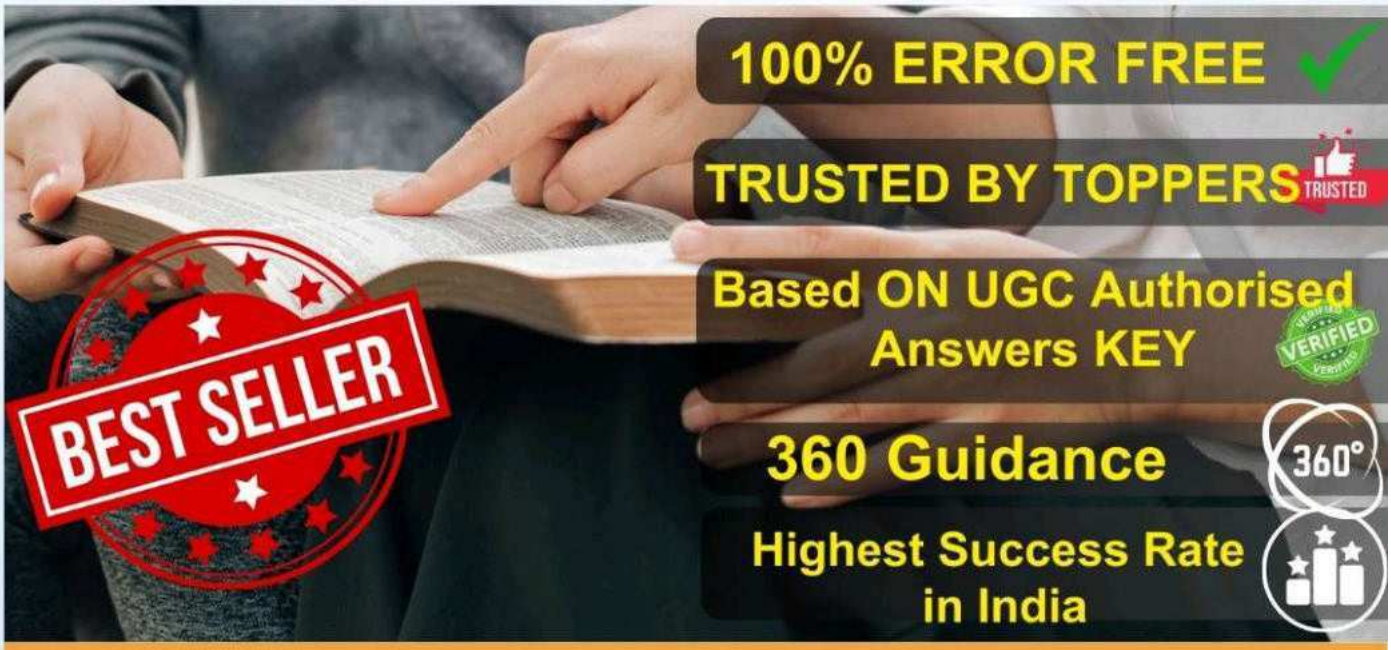

यू.जी.सी. RE-NET समाजशास्त्र 23-08-2024

1. सूची-1 के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-1 (अवधारणा)	सूची-II (व्याख्या)
A. प्रतीकात्मक प्रभुत्व	I. एक पीड़ी से दूसरी पीढ़ी में सामाजिक वर्गों के ब्रीच शक्ति और विशेषाधिकार अनुरक्षण का
B. सामाजिक प्रजनन	II. संस्कृति और इसकी रहस्यमयता के माध्यम से प्रभुत्व का प्रयोग
C. अभ्यसन	III. एक पीढी से दूसरी पीढ़ी में समाज द्वारा प्रभावशाली ज्ञान के संप्रेषण की प्रक्रिया
D. सांस्कृतिक प्रजनन	IV. अधिगत स्ववृत्तियाँ जो लोगों को एक निश्चित त्रिकोण से व्यवहार करने की ओर ले जाती है

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए

A B C D
(a) I II III IV
(b) IV III II I
(c) III IV I II
(d) II I IV III
Ans. (d)

2. एक सामाजिक संरचना जो भौतिक स्थान में लोगों के निवास और गतिविधियों को आयोजित करती है, इस प्रकार जानी जाती है-
(a) समूह
(b) समुदाय
(c) समाज
(d) समिति
Ans.(b)

3. स्वयं के लिए भोजन के साथ ही किसान शेष अन्नोत्पाद का तीन भिन्न निधियों के निर्माण में प्रयोग करते हैं-
A. समारोह निधि
B. प्रतिस्थापन निधि
C. किराया निधि
D. मनोरंजन निधि
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A
(b) केवल A, B और D
(c) केवल A, B और C
(d) केवल C और D
Ans.(c)

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

4."प्रौद्योगिकी को सामाजिक रूप से आकार दिया जाता है।" इस कथन के विषय में निम्नलिखित में से कौन- सा सही नहीं है!

(a) प्रौद्योगिकीय परिवर्तन सामाजिक कारकों द्वारा अनुकूलित होते हैं।

(b) प्रौद्योगिकीय अभिकल्प और प्रकार्य वैज्ञानिक प्रौद्योगिकीय तर्कसंगतता के आंतरिक मानक की तुलना में वस्तुतः सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम है।

(c) प्रौद्योगिकीय परिवर्तन एक नियत रैखिक पथ का अनुसरण करते हैं जिसकी व्याख्या कुछ आंतरिक प्रौद्योगिकीय तों के सन्दर्भों द्वारा की जा सकती है।

(d) प्रौद्योगिकीय परिवर्तन में विवाद, असहमतियाँ और कठिनाईयों सम्मिलित हैं जो प्रौद्योगिकी को आकार देने के लिए रणनीतियों में उचित सामूहिक समूहों को परियुक्त करते हैं।

Ans.(c)

पेपर 1 और सभी नेट विषय के संपूर्ण नोट्स नए सिलेबस और पैटर्न के अनुसार उपलब्ध हैं।
निःशुल्क samples के लिए
अभी कॉल या व्हाट्सएप करें 7690022111 / 9216228788

5. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (पुस्तक)	सूची-II(विचारक)
A. वर्चुअल कम्युनिटीज	I. अल्विन टॉफ्लर
B. सर्विलांस सोसाइटी	II. बौरी बेलमैन
C. पर्सनल कम्युनिटीज	III. हावर्ड रीनगोल्ड
D. थर्ड वेव	IV. डेविड लियोन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

A B C D

(a) III IV II I

(b) II IV III I

(c) I IV III II

(d) II IV I III

Ans. (a)

6.निम्नलिखित में से कौन-सा पर्यावरण परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय संधि-क्योटो प्रोटोकॉल के सम्बन्ध में सत्य नहीं है?

(a) इस पर 1995 में हस्ताक्षर हुए।

(b) विकसित देश अपने उत्सर्जनों को 1990 के स्तर की तुलना में 2008-12 की अवधि तक 5.2% के औसत से कम करने पर सहमत हुए।

(c)इसमें स्वच्छ विकास प्रक्रम (सीडीएम) का प्रारम्भ भी किया।

(d) सीडीएम ने औद्योगिक देशों को विकासशील देशों में स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को निधि प्रदान करके उनके क्योटो लक्ष्यों को पूरा करने हेतु, क्रेडिट प्राप्त करने के लिए अनुमति प्रदान की।

Ans.(a)

7. निम्नलिखित में से कौन-सी अच्छे प्रतिदर्श अभिकल्प की विशेषताएँ हैं?

A.इसका परिणाम वास्तविक प्रतिनिधिक प्रतिदर्श होना चाहिए।

B. यह इस प्रकार होना चाहिए कि जिसके परिणामस्वरूप निम्न प्रतिदर्शचयन त्रुटि हो।

C. यह शोध अध्ययन के लिए उपलब्ध निधि के सन्दर्भ में व्यवहार्य होना चाहिए।

D. यह इस प्रकार होना चाहिए कि प्रणालीगत पूर्वाग्रह को एक अच्छी विधि से नियंत्रित किया जा सके।

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए
(a) केवल A, B और C
(b) केवल A, B, C और D
(c) केवल A, C और D
(d) केवल B, C और D
Ans. (b)

Let's Crack #JRF Asst Professor / Phd

ALL UGC NET SUBJECT AVAILABLE

Study group Benefits with privacy ⬇

1. Concept/ Theory pdf Notes
2. MCQ Quiz
3. Latest PYQs
4. Quick Revision Amriut
5. Model Test Papers
6. Current Affairs Focus
7. All India Rank
8. Latest exam Updates
9. Brain Booster facts

Free Free --- Join UGC NET
Subject wise Free study group.
ALL subject available.
send us Subject + medium on this number 7690022111. Our team will add you
Click on link to join
https://wa.link/9r0r0

Don't Miss this opportunity
Join & share..... आज ही जुड़े और अपनी NET / JRF एक बार मे सफलता सुनिश्चित करे .
Contact to team to join +91 769000-22111 +91 92162-28788

8. "परिवार और घनिष्ठ सम्बन्धों पर लिखी गई निम्नलिखित रचनाओं को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें
A. अ सोशलॉजी ऑफ फैमिली लाइफ (डेबोहार चेम्बर्स)
B. रिथिंकिंग फैमिली प्रैक्टिसेज (डेविड एच.जे. मॉर्गन)
C. फैमिलीज इन टूडेज वर्ल्ड (डेविड चील)
D. द चेंजिंग एक्सपीरियंस ऑफ चाइल्डहुड (सी. स्मार्ट बी. नील और ए. वेड)
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) C, D, A, B
(b) A, D, B, C
(c) B, C, D, A
(d) D, C, B, A
Ans. (d)

9. अल्फ्रेड शुज का परिघटनात्मक दृष्टिकोण 'जीवन जगत' को निम्न प्रकार से संदर्भित करता है-
(a) 'अनुदान रूप में स्वीकृत' और 'सांसारिक यथार्थ' पर आधारित नहीं
(b) 'अनुदान रूप में स्वीकृत' और 'सांसारिक यथार्थ' पर आधारित
(c) 'अनुदान रूप में स्वीकृत' नहीं परन्तु 'सांसारिक यथार्थ पर आधारित
(d) 'अनुदान रूप में स्वीकृत' नहीं और 'सांसारिक यथार्थ पर आधारित नहीं

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

Ans. (b)

10.निम्नलिखित को प्रकाशन के कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए -
A. मॉडल्स ऑफ डेमोक्रेसी (डेविड हेल्ड)
B. अंडरस्टैंडिंग सोशल मूवमेंट्स (ग्रेग मार्टिन)
C. पॉलिटिकल आइडियोलॉजीज ऐन इंट्रोडक्शन (पंचम संस्करण (एंड्रयू हेयवुड)
D. पॉवर : ए रेडिकल व्यू (स्टीफेन ल्यूक्स)
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का बयन कीजिए:
(a) D, A, C, B
(b) B, D, C, A
(c) C, B, D, A
(d) A, B, C, D
Ans.(a)

11. एक व्यक्ति के वंश के सदस्य यथातथ्य और लाक्षणिक रूप से उसके हृदय के निकट हैं क्योंकि जिन्होंने अपने खेत और चूल्हे अलग कर लिए, उसके बाद भी वो अपनी भ्रातृनिष्ठा बनाए रखते हैं। यह द्वैधवृत्ति पायी जाती है क्योंकि -
A. वंशीय एकात्मकता का आदर्श उतनी दृढ़ता से स्पष्टदर्शित नहीं होता है जितना भ्रातृवत आदर्श।
B. यह सदैव स्पष्ट नहीं होता है कि किसकी गणना पूर्ण वंशीय सदस्य के रूप में की जानी चाहिए।
C. वंशीय बन्धन कई पीढ़ियों के बाद समाप्त हो जाते हैं।
D. बाध्य पीढ़ियों की संख्या स्पष्ट रूप से नियत नहीं है।
E. एक पिता के भ्राता का पुत्र हो एक दूरस्थ गाँव में चला जाता है, अनुष्ठान-परम्पराओं के उद्देश्य से एक सदस्य है परन्तु सामूहिक गतिविधि में पूर्ण रूप से भाग नहीं ले सकता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a)केवल B, C और D
(b) केवल C, D और E
(c) केवल A, B, C और D
(d) केवल A, B, C, D और E
Ans. (d)

12. सूची-1 के साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सूची-I (अवधारणा)	सूची-II रचनाकार
A. वर्ग स्थिति	I. अमत्ये सेन
B. क्षमता उपागम	II. मैक्स वेबर
C. आर्थिक प्रगति के चरण	III. थरस्टीन वेब्लेन
D. प्रदर्शन उपभोग	IV.डब्ल्यू. डब्ल्यू. रोस्टोव

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

	A	B	C	D
(a)	III	IV	II	I
(b)	IV	III	I	II
(c)	I	II	III	IV
(d)	II	I	IV	III

Ans. (d)

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

UGC NET SOCIOLOGY JUNE 2023

1. नीचे दी गई इकाईयों के ग्रामीण-नगरीय सातत्य को सुव्यवस्थित कीजिए :

A. पुरवा / खेड़ा

B. नगरीय एग्लोमेरेशन

C. महानगर

D. नगर

E. मेगापोलिस

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) A, B, D, C, E
(b) A. B. C. D. E
(c) E, D, C, B, A
(d) A. D. B. C. E

2. टालकॉट पार्रान्स के मत में सामाजिक व्यवस्था में क्या सम्मिलित हैं:

A. कृत्य

B. लक्ष्य (साध्य)

C. परिस्थितियां

D. मान्यताएं

E. साधन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) केवल A और B

(b) केवल A, B और C

(c) केवल B, C और D

(d) केवल A, B, C और E

3. उनका चयन कीजिए जिन्होंने संघर्ष के प्रकार्य की पहचान की थी।

A. कार्ल मार्क्स

B. राल्फ डाइरेनडॉर्फ

C. जार्ज सिम्मेल

D. सी. राइट गिल्स

E. लुइस कोज़र

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) केवल A, B और E

(b) केवल C और D

(c) केवल C और E

(d) केवल D और D

PROFESSORS ADDA

4. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन (Assertion (A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में,

अभिकथन A : समकालीन समाजो में नृजातिमूलक (संजातीय) अस्मिता अभिकथन का प्रक्रम उद्भाषित हो रहा है।

कारण B : अपनी आस्मिता की तलाश करना मानवीय दशा के लिए अन्तर्भूत तत्त्व है।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए ।

(a) A और R दोनों राही हैं और R. A की राही व्याख्या है

(b) A और R. दोनों सही है. लेकिन R. A की सही व्याख्या नहीं है

(c) A सही है लेकिन R सही नहीं है

(d) A. सही नहीं है लेकिन R सही हैं

5. निम्नांकित में से किन्होंने आधुनिक संगठनों के संदर्भ में शक्ति विचारधारा और विमर्श के मध्य संबंध स्थापित किया।

(a) एम फूको

(b) एफ फूकोयामा

(c) के. मेनहिम

(d) एम. कैस्लेल्स

6. मैलिनान्सकी के अनुसार क्षेत्रीय स्तर पर विसरण का अध्ययन करने के क्रम में व्यक्ति को रूपांतरण की किस इकाई पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है?

(a) सांस्कृतिक तत्व

(b) भूमिका समुच्चय

(c) प्रस्तिथिति समुच्चय

(d) संगठित प्रणालियां (तंत्र) या संस्था

7. निम्नांकित में से कौन शरीर के समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए प्रसिद्ध हैं:

A. बी. एस. टर्नर और स्यू स्कॉट

B. डेविड मोर्गन और बी. एस. टर्नर

C. बी. एस. टर्नर और मिशेल फूको

D. टैलकॉट पार्सन्स और पिट्रीम सोरोकिन

E. ई.ई. एवांस प्रिचार्ड और मार्क ब्लोक

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर

(a) केवल A, B और C

(b) केक्स A, B और D

(c) केवल A, B और E

(d) केवल A, C और E

8. निग्रांकित में से किसने सांस्कृतिक परिवर्तन' की परिभाषा ऐसे प्रक्रम के रूप में दी है जिसके द्वारा समाज की विधमान व्यवस्था अर्थात इसकी सामाजिक. आध्यात्मिक और भौतिक स्वरूप एक रूप से दूसरे स्वरूप में रूपांतरित हो जाती है:

PROFESSORS ADDA

(a) सी. लेवी-स्ट्रॉस

(b) टी. पार्सन्स

(c) बी. मौलिनोव्स्की

(d) आर. के. मर्टन

9. 'द राब्जेक्शन ऑफ वीमेन' नामक पुस्तक के रचियता कौन हैं :

(a) सिल्विया वाल्बी

(b) बोव कोनेल

(c) एस. फायरस्टोन

(d) जॉन स्टुअर्ट मिल

10. सूची I के साथ सूची II से मिलान कीजिए

सूची । (सामाजिक आदोलनों के नाम	सूची II राज्य
A. चिपको	I. आंध्र प्रदेश
B. अर्क विरोधी	II. पश्चिम बंगाल
C. नक्सलबाड़ी	III. उत्तराखंड
D. शेतकारी आंदोलन	IV. महाराष्ट

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का वयन कीजिए:

(a) A-III, B-I, C-II, D-IV
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-V, B-III, C -II D-I
(d) A-II, B-I, C-III, D-IV

11. सोशियोलॉजी एन एन आर्टफॉर्म पुस्तक किस समाजशास्त्री ने लिखा है ?

(a) टालर्केल पार्सन्स

(b) सी. राइट मिल्स

(c) ऐल्विन गौल्लनर

(d) रॉबर्ट निस्वेट

12. सूची । के साथ सूची ।। से मिलान कीजिए

सूची । (चितक)	सूची II (अवधारणाए)
A. मैक्स वेबर	I. ताकित्ता
B. जान सिमेल	II. मित्रभाव

PROFESSORS ADDA

C. भोर्सन्सटीन वेब्तेन	III. नुमाइशी उपभोग
D. डोरोधी एस थामस	IV. स्थिति की परिभाषा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) A-I, B-II. C-III, D-IV
(b) A-I, B-III, C-IV, D-I
(c) A-III. B-IV. C-I. D-II
(d) A-IV. B-I, C-II. D-III

13. मूल्य तटस्थ समाजशास्त्र (वैल्यू न्यूट्रल सोशियोलोजी) के मिथक को दूर करने के लिए 'एंटी-मिनोटुअर' की अवधारणा किसने दी थी।
(a) एंथनी गिडेन्स
(b) एल्विन गोल्डनर
(c) रॉबर्ट गर्दन
(d) थर्सटन वेब्लेन

14. विभिन्न विज्ञानों को अगस्त कॉम्टे के अनुसार जटिल से सरल विज्ञान के सोपानक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. भौतिकी
B. जीवविज्ञान
C. खगोलशास्त्र
D. रसायन विज्ञान
E. समाजशास्त्र
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का बयन कीजिए :
(a) A. C. E. B. D
(b) E, B. C. A, D,
(c) C , B, E, D A
(d) E, B, D, A, C

15. विज्ञापन का संबंध और पूंजीवादी समाज के परिरक्षण की विवेचना निम्नांकित में से किन्होंने की है?
(a) दुर्सीम और मोरा
(b) पॉपर और शुद्ध
(c) एडोनों ओर मार्फ्यूज
(d) गावर्स और एंजेल्स

16. नीचे दो कधन दिए गए हैं:
कथन I : मार्क्स, सिमेल और डैहरेनड्रॉफ द्वन्द-संदर्श के प्रमुख सिद्धांततेत्ता हैं।
कथन II : मैक्स तेबर संघर्ष को समाजिक संबंध के रूप में व्यवहृत कर इसकी परिभाषिक व्याख्या करने वाले पहले व्यक्ति थे।
उपरोक्त कधन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

PROFESSORS ADDA

(a) कथन I और II दोनों सत्य हैं।

(b) कथन I और II दोनों असत्य है

(c) कथन I सत्य है. लेकिन कथन II असत्य है

(d) कथन I असत्य है. लेकिन कथन II सत्य है

17. जनजाति-जाति सातत्य' के पक्षधर है :

(a) आंद्रे बेते

(b) वीना दास

(c) सुरजीत सिन्हा

(d) एमएसए राव

18. कार्ल पॉपर निम्नलिखित में से किस निगमनात्मक शोध रणनीति के पक्षधर थे :

A. नैसर्गिक और सामाजिक जगत में आवश्यक रामानताएँ शामिल होती हैं

B. विज्ञान का उद्देश्य सामान्यीकरण को स्थापित करना है

C. परिकल्पना का प्रयोग किये बिना ही तथ्यों का विश्लेषण. तुलना एवं वर्गीकरण किया जाता है।

D. यह आवश्यक नहीं हैं कि सामाजिक तथ्यों का विश्लेषण गिध्याकरण सिद्धांत के आधार पर किया जाए

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) केवल A और B

(b) केवल B और C

(c) केवल C और D

(d) केवल A

19. सूची I के साथ सूची II से मिलान कीजिए

LIST I (लेखक)	LIST II (पुस्तकें)
A. जी. एस. धूरीये	I. दि इंडियन विलेज कम्प्यूनिटी
B. एल.एस.एस. ओ माली	II. काष्ट एण्ड रेस इन इन्डिया
C. सर एच एच रिज़ते	II. इन्डियन काष्ट कस्टम्स
D. बी. एच. वेडन पावेल	IV. ट्राइब्स एण्ड काष्टस ऑफ बेंगाल, इथनो ग्राफिक ग्लासरी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) A-I, B-III, C-IV, D-II
(b) A-III, B-IV, C -I D-II
(c) A-IV, B-I, C-II, D-III
(d) A-I, B-I, C-III, D-IV

PROFESSORS ADDA

20. निम्नांकित में से किन्होंने जनसंचार माध्यग के अध्ययन में वेश्विक गांव (ग्लोबल विलेज) के सिद्धांत का परिचय कराया:

(a) मारक्यूज़

(b) मैकलेलन

(c) मैकलुहान

(d) मिलीबैंड

21. वर्ल्ड रिवोल्यूशन इन फैमिली पेटर्स नामक पुस्तक किनकी कृति है?

(a) विलियम जे. गूडे

(b) सिल्विया वाल्बी

(c) बेही फ्रीडन

(d) सिमोन दी बुवा

22. ज्ञान की परिभाषा में, उन तत्त्वों को चिन्हित कीजिए जो वैध है।

A. ज्ञान वह मान्यता है जो सत्य है

B. ज्ञान वह मान्यता है जो न्यायसंगत है

C. ज्ञान अनुमानिक निर्मिति है

D. ज्ञान दूसरों के सत्य मतों की मान्यता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) केवल A और B

(b) केवल C और D

(c) केवल A और C

(d) केवल B और D

23. सूची I के साथ सूची II से मिलान कीजिए

सूची I (सिद्धांत / योगदान)	सूची II (सिद्धांतकार)
A. नाट्य विश्लेषण	I. एल्फ्रेड शुद्ध
B. उत्तर-आधुनिकतावाद	II. मिशेल फूको
C. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद	III. इरविंग गोफमैन
D. परिघटना विज्ञान संवृत्तिशास्त्र	IV. हर्बर्ट ब्लूमर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(a) A- IV, B-III, C-I, D-II
(b) A-III, B-IV, C-II, D-I
(c) A- II, B- III, C-IV, D-I
(d) A-III, B-II, C-IV, D-I

PROFESSORS ADDA

99. ग्रामीण स्तर पर जाति व्यवस्था व्यवस्था के रूप में बंधी है।

(a) उत्पादन

(b) सम्प्रेषण

(c) आत्मसात्करण/समावेशीकरण

(d) सेवाओं का पण्यीकरण

100. निम्नलिखित समूहों में कौन-सा समूह सेवा प्रदाताओं जैसे लुहार बढ़ई. कुम्हार नाई इत्यादि के दीर्घमालिक संबंध स्थापित किया हुआ है।

(a) भूस्वामी

(b) व्यापारी

(c) किरायेदार काश्तकार

(d) ग्रामीण कर संग्राहक

ANSWERS

1	A	21	A	41	A	61	B	81	C
2	D	22	A	42	B	62	A	82	C
3	C	23	D	43	C	63	C	83	A
4	B	24	B	44	B	64	D	84	B
5	A	25	D	45	A	65	C	85	A
6	D	26	C	46	A	66	C	86	B
7	A	27	D	47	A	67	C	87	B
8	C	28	D	48	D	68	C	88	C
9	D	29	A	49	D	69	A	89	A
10	A	30	C	50	C	70	D	90	A
11	D	31	D	51	C	71	B	91	D
12	A	32	D	52	B	72	B	92	B
13	B	33	C	53	C	73	A	93	B
14	D	34	C	54	B	74	B	94	B
15	C	35	A	55	D	75	C	95	B
16	A	36	B	56	B	76	C	96	C
17	C	37	B	57	D	77	C	97	*
18	A	38	A	58	C	78	D	98	A
19	A	39	A	59	A	79	*	99	A
20	C	40	B	60	A	80	D	100	A

PROFESSORS ADDA

UGC NET समाजशास्त्र PYQ (2016-JAN 2025)

विश्लेषण प्रश्न पैटर्न और ट्रेंड विश्लेषण

1. प्रश्नों के प्रकारों में विविधता:

- **प्रत्यक्ष पहचान:** समाजशास्त्रियों, उनकी अवधारणाओं (जैसे, हैबिटस, मूल्य तटस्थता, जजमानी व्यवस्था, वैश्विक गांव, प्लास्टिक सेक्सुअलिटी), पुस्तकों और सिद्धांतों की सीधी पहचान पर आधारित प्रश्न। (उदाहरण: 'द सब्जेक्शन ऑफ वीमेन' के लेखक कौन हैं? 'रन अवे वर्ल्ड' अवधारणा किसकी है?

- **अवधारणात्मक स्पष्टता:** समाजशास्त्रीय अवधारणाओं की परिभाषा, विशेषताओं, प्रकारों और उनके बीच सूक्ष्म अंतरों की समझ का परीक्षण करने वाले प्रश्न। (उदाहरण: यांत्रिक एकता सावयवी एकता में क्यों बदलती है? जजमानी व्यवस्था क्या है?

- **सिद्धांतों का अनुप्रयोग:** विभिन्न समाजशास्त्रीय सिद्धांतों (जैसे प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, संरचनावाद, उत्तर-आधुनिकतावाद) को विशिष्ट सामाजिक घटनाओं या मुद्दों पर लागू करने की क्षमता का आकलन।

- **शोध प्रविधि:** शोध के प्रकार (गुणात्मक, मात्रात्मक), प्रतिचयन विधियाँ (प्रायिकता, गैर-प्रायिकता), आंकड़ा संग्रहण तकनीकें (साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन), वैधता, विश्वसनीयता, परिकल्पना परीक्षण (काई-स्क्वायर), शोध नैतिकता, और ज्ञान के स्रोतों पर प्रश्न।

- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason):** समाजशास्त्रीय कथनों, सिद्धांतों या निष्कर्षों और उनके तर्कों के बीच तार्किक संबंध का मूल्यांकन करने वाले प्रश्न। (उदाहरण: A: समकालीन समाजों में नृजातीय अस्मिता अभिकथन... R: अपनी अस्मिता की तलाश करना..

- **मिलान (Matching):** समाजशास्त्रियों को उनकी अवधारणाओं/पुस्तकों से, अवधारणाओं को उनकी विशेषताओं से, या आंदोलनों को उनके संबंधित राज्यों/क्षेत्रों से मिलाने वाले प्रश्न। (उदाहरण: सूची I (चिंतक) को सूची II (अवधारणा) से मिलाएं)।

- **कालानुक्रमिक क्रम (Chronological Order):** समाजशास्त्रियों, उनकी कृतियों, सामाजिक आंदोलनों, घटनाओं या अवधारणाओं के विकास क्रम को व्यवस्थित करने वाले प्रश्न। (उदाहरण: गिडेंस के कार्यों का कालक्रम, दुर्खीम की कृतियों का कालक्रम)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **बहु-विकल्पीय कथन (Multiple Correct Statements):** किसी अवधारणा, सिद्धांतकार, सामाजिक मुद्दे या शोध पद्धति के बारे में दिए गए कई कथनों में से सही या गलत कथनों के समूह की पहचान करने वाले प्रश्न।

- **अनुच्छेद आधारित प्रश्न (Passage-based Questions):** समाजशास्त्रीय लेखों या पुस्तकों के अंशों पर आधारित प्रश्न, जो पाठ की समझ, व्याख्या, निहितार्थ और आलोचनात्मक मूल्यांकन का परीक्षण करते हैं। (उदाहरण: नौकरशाही, ज्ञान, ग्रामीण जाति व्यवस्था पर आधारित अनुच्छेद)।

2. कठिनाई स्तर और कौशल परीक्षण:

- परीक्षा में तथ्यात्मक ज्ञान के साथ-साथ अवधारणात्मक स्पष्टता, विश्लेषणात्मक तर्क और आलोचनात्मक मूल्यांकन पर जोर दिया जाता है

- भारतीय समाज और विचारकों पर प्रश्नों की अच्छी संख्या होती है।

- शोध प्रविधि पर आधारित प्रश्न अवधारणाओं और उनके अनुप्रयोग की समझ की मांग करते हैं।

- अभिकथन-कारण और बहु-कथन वाले प्रश्न विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

आगामी UGC NET / JRF परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

3. नवीनतम रुझान:

- समकालीन सिद्धांतकारों (जैसे फूको, गिडेंस, बोरदियू, हैबरमास, कैस्टेल) और उत्तर-आधुनिकतावाद, वैश्वीकरण जैसे विषयों पर बढ़ते प्रश्न।

- पर्यावरण, प्रौद्योगिकी, मीडिया और लिंग जैसे समसामयिक मुद्दों पर अधिक ध्यान।

- भारतीय समाज के बदलते स्वरूप और समकालीन सामाजिक समस्याओं पर जोर।

- शोध प्रविधि में गुणात्मक और मिश्रित विधियों पर प्रश्न।

PROFESSORS ADDA
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

अंतिम सफलता के लिए प्रोफेसर्स अड्डा का संपूर्ण अपडेटेड अध्ययन सामग्री पैकेज खरीदें।
हम साल में 2 बार NET Exam से पहले अप डेट करते है.

प्रिय स्टूडेंट्स हमारी अमृत नोट्स पुस्तिका छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है।
आप खुद से, कहीं से,कुछ भी पढ़ें, लेकिन एक बार हमारे स्टडी मटेरियल से जरूर पढ़ें ,
आपको बहुत फायदा होगा। गुणवत्तापूर्ण संपूर्ण मार्ग दर्शन देना हमारी प्राथमिकता है.
Contact 7690022111 / 9216228788

विषय-वस्तु फोकस और महत्व:

- **समाजशास्त्रीय सिद्धांत (शास्त्रीय और समकालीन):** कॉम्टे, स्पेंसर, मार्क्स, वेबर, दुर्खीम (शास्त्रीय विचारक) के साथ-साथ पार्सन्स, मर्टन, डेहरेनडॉर्फ, कोज़र, सिमेल, मीड, गॉफमैन, शुट्ज़, फूको, गिडेंस, बोरदियू, हैबरमास, कैस्टेल, रिट्जर (समकालीन विचारक) पर विशेष ध्यान। उनके प्रमुख सिद्धांत, अवधारणाएं और कार्यप्रणाली महत्वपूर्ण हैं।

- **भारतीय समाजशास्त्री और भारतीय समाज:** घुर्ये, श्रीनिवास, अम्बेडकर, मुखर्जी (राधाकमल, रामकृष्ण), देसाई (ए.आर.), कर्वे, बेते, दुबे, वीना दास, सुधीर कक्कड़ जैसे विचारकों के योगदान। जाति व्यवस्था, नातेदारी, परिवार, ग्रामीण-नगरीय समाज, सामाजिक परिवर्तन (संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण), सामाजिक आंदोलन, धर्म, पर्यावरण और विकास के मुद्दे।

- **शोध प्रविधि:** अनुसंधान डिजाइन, प्रतिचयन, डेटा संग्रह, डेटा विश्लेषण, वैधता, विश्वसनीयता, नैतिकता, सिद्धांत निर्माण।

- **बुनियादी अवधारणाएं और संस्थाएं:** सामाजिक संरचना, संस्कृति, समाजीकरण, सामाजिक स्तरीकरण (वर्ग, जाति, लिंग, प्रजाति), सामाजिक संस्थाएं (परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति)।

- **सामाजिक परिवर्तन और विकास:** आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, विकास के सिद्धांत, सामाजिक आंदोलन, पर्यावरण संबंधी मुद्दे, प्रौद्योगिकी और समाज।

- **ग्रामीण और नगरीय समाजशास्त्र:** ग्रामीण-नगरीय सातत्य, जजमानी व्यवस्था, कृषक समाज,

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

भूमि सुधार, नगरीकरण, मलिन बस्तियां, शहरी पारिस्थितिकी।

- **परिवार, विवाह और नातेदारी:** परिवार के प्रकार, विवाह के नियम, नातेदारी संरचना, लिंग और समाज।

इकाई 1: समाजशास्त्रीय सिद्धांत (Sociological Theory)

- **शास्त्रीय विचारक:**
  - **कॉम्टे:** विज्ञानों का सोपानक्रम (सरल से जटिल), चिंतन की तीन अवस्थाएं (धर्मशास्त्रीय, तत्वमीमांसीय, प्रत्यक्षवादी)।
  - **स्पेंसर:** सामाजिक विकास, तुलनात्मक विधि।
  - **मार्क्स:** वर्ग संघर्ष, अलगाव (Alienation), उत्पादन प्रणाली (मालिक, किसान, मजदूर), पूंजी (स्थिर/परिवर्ती), अधिशेष मूल्य, शोषण।
  - **वेबर:** शक्ति/प्राधिकार (प्रकार - पारंपरिक, करिश्माई, विधिक-तार्किक; नौकरशाही पारंपरिक नहीं), प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना, वर्स्टहेन, मूल्य तटस्थता/मूल्य संदर्भ, सामाजिक क्रिया के प्रकार।
  - **दुर्खीम:** सामाजिक तथ्य (विशेषताएं - बाह्यता, बाध्यता), श्रम विभाजन, यांत्रिक/सावयवी एकता (गत्यात्मक घनत्व से परिवर्तन), आत्महत्या (प्रकार), धर्म (पवित्र/अपवित्र, टोटेमवाद), सामूहिक चेतना, नैतिकता और शिक्षा, शोध प्रविधि (रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड, तुलनात्मक विधि)।
  - **सिमेल:** समाजशास्त्र का स्वरूपवाद, द्वय/त्रय (Dyad/Triad), संघर्ष के प्रकार्य, मित्रभाव (Sociability)।

- **संरचनात्मक-प्रकार्यवाद और नव-प्रकार्यवाद:**
  - **पार्सन्स:** सामाजिक क्रिया का सिद्धांत (कर्ता, लक्ष्य, साधन, परिस्थितियां, मान्यताएं), सामाजिक व्यवस्था (AGIL मॉडल - अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण, प्रतिमान अनुरक्षण), अभिप्रेरणात्मक/मूल्य अभिविन्यास।
  - **मर्टन:** प्रकार्य (प्रकट/अप्रकट), दुष्प्रकार्य, मध्य-स्तरीय सिद्धांत (Middle-Range Theory), संदर्भ समूह, विचलन (Anomie)।
  - **रेडक्लिफ-ब्राउन:** सामाजिक संरचना (वास्तविक संबंध), संरचना/सामाजिक व्यवस्था में अंतर नहीं।
  - **मेलिनोव्स्की:** प्रकार्यवाद (व्यक्तिवादी/आवश्यकता आधारित), संस्कृति, विसरण का अध्ययन (संगठित

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब.
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं, बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है, जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन, **Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का "अमृत निचोड़" — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

🧠 लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

💡 कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

Bonus Insides

🎯 यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं, "सही पढ़ना" चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

समाजशास्त्र वनलाइनर्स

1. प्रश्न: किसे 'समाजशास्त्र का जनक' माना जाता है और 1830 के दशक में अपनी पुस्तक द कोर्स इन पॉजिटिव फिलॉसफी में इस शब्द को गढ़ा?
   उत्तर: ऑगस्ट कॉम्ट।
2. प्रश्न: अपने 1897 के अध्ययन सुसाइड (आत्महत्या) में, किस शास्त्रीय समाजशास्त्री ने अहंवादी, परोपकारी, अनोमिक और भाग्यवादी जैसी आत्महत्या के प्रकारों की पहचान की?
   उत्तर: एमील दुर्खीम।
3. प्रश्न: 'वर्ग संघर्ष' की अवधारणा, जो बुर्जुआ और सर्वहारा के बीच है, किस 19वीं सदी के जर्मन दार्शनिक के लेखन का केंद्र है?
   उत्तर: कार्ल मार्क्स।
4. प्रश्न: किस समाजशास्त्री ने अपनी पुस्तक द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म (1905) में तर्क दिया कि कुछ प्रोटेस्टेंट विश्वासों ने आधुनिक पूंजीवाद का मार्ग प्रशस्त किया?
   उत्तर: मैक्स वेबर।
5. प्रश्न: 'सामाजिक तथ्य' की अवधारणा को "कार्य करने, सोचने और महसूस करने के तरीके, जो व्यक्ति से बाहरी हैं" के रूप में किस फ्रांसीसी समाजशास्त्री ने अपनी 1895 की पुस्तक द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड में परिभाषित किया?
   उत्तर: एमील दुर्खीम।
6. प्रश्न: समाज की एक जीवित जीव के रूप में सादृश्यता, जो सरल से जटिल रूपों ('सामाजिक डार्विनवाद') में विकसित होती है, मुख्य रूप से किस ब्रिटिश दार्शनिक से जुड़ी है?
   उत्तर: हर्बर्ट स्पेंसर।
7. प्रश्न: 'समाजशास्त्रीय कल्पना' की अवधारणा को अपनी 1959 की इसी नाम की

पुस्तक में किसने विकसित किया, जिसमें व्यक्तिगत परेशानियों को सार्वजनिक मुद्दों से जोड़ने का आग्रह किया गया?

उत्तर: सी. राइट मिल्स।

8. प्रश्न: विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों का वर्णन करने के लिए 'गेमाइनशाफ्ट' (समुदाय) और 'गेसेलशाफ्ट' (समाज) की अवधारणाएं किस जर्मन समाजशास्त्री द्वारा प्रस्तुत की गईं?

उत्तर: फर्डिनेंड टॉनीज।

9. प्रश्न: द प्रेजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ (1956) के लेखक कौन हैं, जो सामाजिक संपर्क के लिए 'नाटकीय' दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है?

उत्तर: एर्विंग गॉफमैन।

10. प्रश्न: 'प्रकट' (इच्छित) और 'अप्रकट' (अनिच्छित) कार्यों की अवधारणाएं किस अमेरिकी समाजशास्त्री द्वारा उनके प्रकार्यवाद सिद्धांत के हिस्से के रूप में विकसित की गईं?

उत्तर: रॉबर्ट के. मर्टन।

11. प्रश्न: 'आत्म-दर्पण सिद्धांत' (looking-glass self), जो बताता है कि हमारी आत्म-भावना दूसरों की हमारे बारे में धारणा से विकसित होती है, किस अमेरिकी समाजशास्त्री द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: चार्ल्स हॉर्टन कूली।

12. प्रश्न: कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने किस वर्ष अपना प्रभावशाली राजनीतिक पैम्फलेट, द कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो प्रकाशित किया?

उत्तर: 1848.

13. प्रश्न: 'नौकरशाही' की अवधारणा का एक आदर्श-प्रकार संगठन के रूप में, जो पदानुक्रम और नियमों की विशेषता है, का व्यापक विश्लेषण किस जर्मन समाजशास्त्री ने किया?

उत्तर: मैक्स वेबर।

14. प्रश्न: माइंड, सेल्फ, एंड सोसाइटी (1934) के लेखक कौन हैं, जो प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के परिप्रेक्ष्य के लिए एक foundational ग्रंथ है?

उत्तर: जॉर्ज हर्बर्ट मीड।

15. प्रश्न: 'एनोमी' शब्द, जो नियमहीनता की स्थिति को संदर्भित करता है, को एमील दुर्खीम द्वारा किस पुस्तक में विचलित व्यवहार की व्याख्या के लिए लोकप्रिय बनाया गया था?

उत्तर: सुसाइड (1897)।

16. प्रश्न: 'हैबिटस', 'फील्ड', और 'सांस्कृतिक पूंजी' की अवधारणाएं किस समकालीन फ्रांसीसी समाजशास्त्री के काम के केंद्र में हैं?

उत्तर: पियरे बॉरदिए।

17. प्रश्न: भारतीय समाजशास्त्र में, किसने रामपुर गांव में अपने फील्डवर्क के आधार पर 'संस्कृतीकरण' और 'प्रभु जाति' की अवधारणाओं को पेश किया?

उत्तर: एम.एन. श्रीनिवास।

18. प्रश्न: पुस्तक होमो हायरेरिकस: द कास्ट सिस्टम एंड इट्स इम्प्लीकेशंस (1966), जो पवित्रता और प्रदूषण के सिद्धांत पर जाति का विश्लेषण करती है, किसके द्वारा लिखी गई थी?

उत्तर: लुई ड्यूमोंट।

19. प्रश्न: किसे 'भारतीय समाजशास्त्र का पिता' माना जाता है और उन्होंने 1919 में बॉम्बे विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की?

उत्तर: जी.एस. घुर्ये (गोविंद सदाशिव घुर्ये)।

20. प्रश्न: AGIL प्रतिमान (अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण, विलंबता), सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकताओं का एक मॉडल, किस संरचनात्मक प्रकार्यवादी द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: टालकॉट पार्सन्स।

21. प्रश्न: भारतीय राष्ट्रवाद का मार्क्सवादी विश्लेषण, जो पुस्तक सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म (1948) में प्रस्तुत किया गया है, किस विद्वान द्वारा लिखा गया था?

उत्तर: ए.आर. देसाई।

22. प्रश्न: समाजशास्त्रीय जांच की एक विधि के रूप में 'वर्स्टेहेन' (व्याख्यात्मक

समझ) की अवधारणा की वकालत किसने की?

उत्तर: मैक्स वेबर।

23. प्रश्न: अपनी पुस्तक डिसिप्लिन एंड पनिश (1975) में, किस उत्तर-आधुनिक विचारक ने दंड प्रणालियों में बदलाव का विश्लेषण किया और 'पैनोप्टिकॉन' की अवधारणा पेश की?

उत्तर: मिशेल फूको।

24. प्रश्न: तंजौर गांव का अध्ययन, जो पुस्तक कास्ट, क्लास, एंड पावर (1965) में प्रस्तुत किया गया और ड्यूमोंट के दृष्टिकोण के विपरीत था, किसके द्वारा किया गया था?

उत्तर: आंद्रे बेतेई।

25. प्रश्न: किसने 'तनाव सिद्धांत' (Strain Theory) का प्रस्ताव दिया, जिसमें यह सुझाव दिया गया कि विचलन तब होता है जब एक समाज अपने सभी सदस्यों को सामाजिक रूप से स्वीकार्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की समान क्षमता नहीं देता है?

उत्तर: रॉबर्ट के. मर्टन।

26. प्रश्न: 'यांत्रिक एकजुटता' और 'सावयवी एकजुटता' के बीच का अंतर एमील दुर्खीम ने किस 1893 की पुस्तक में किया था?

उत्तर: द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी।

27. प्रश्न: 'संरचनाकरण सिद्धांत' (structuration theory), जो एजेंसी-संरचना बहस को हल करने का प्रयास करता है, किस ब्रिटिश समाजशास्त्री का एक प्रमुख योगदान है?

उत्तर: एंथनी गिडेंस।

28. प्रश्न: भारत में नातेदारी संगठन (1953) किसने लिखा, जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों में नातेदारी प्रणालियों का व्यापक सर्वेक्षण प्रदान किया गया है?

उत्तर: इरावती कर्वे।

29. प्रश्न: 'सार्वजनिक क्षेत्र' की अवधारणा को तर्कसंगत-महत्वपूर्ण बहस के लिए एक डोमेन के रूप में फ्रैंकफर्ट स्कूल के किस जर्मन समाजशास्त्री द्वारा विकसित किया

गया था?

उत्तर: युरगेन हेबरमास।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

30. प्रश्न: 'नृजाति-पद्धति-विज्ञान' (ethnomethodology) शब्द, एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण जो अध्ययन करता है कि लोग अपनी रोजमर्रा की दुनिया को कैसे समझते हैं, किस अमेरिकी समाजशास्त्री द्वारा गढ़ा गया था?

उत्तर: हेरोल्ड गारफिंकेल।

31. प्रश्न: 'शक्तिशाली अभिजात वर्ग', समाज के शीर्ष पर धनी और प्रभावशाली लोगों का एक छोटा समूह, किस अमेरिकी समाजशास्त्री द्वारा विकसित एक अवधारणा थी?

उत्तर: सी. राइट मिल्स।

32. प्रश्न: पुस्तक द लोनली क्राउड (1950), जो 'आंतरिक-निर्देशित' से 'अन्य-निर्देशित' व्यक्तित्व प्रकारों में बदलाव का वर्णन करती है, किस समाजशास्त्री द्वारा सह-लिखित थी?

उत्तर: डेविड रिज़मैन।

33. प्रश्न: कौन 'विश्व-व्यवस्था सिद्धांत' से जुड़ा है, जो दुनिया को कोर, अर्ध-परिधि और परिधि राष्ट्रों में विभाजित करता है?

उत्तर: इमानुएल वालरस्टीन।

34. प्रश्न: 'मिथ्या चेतना' की अवधारणा किस विचारक के संघर्ष सिद्धांत में एक प्रमुख विचार है?

उत्तर: कार्ल मार्क्स।

35. प्रश्न: 'अल्पतंत्र का लौह नियम', जो बताता है कि संगठन के सभी रूप अनिवार्य रूप से अल्पतंत्रीय प्रवृत्तियों को विकसित करेंगे, किस समाजशास्त्री द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: रॉबर्ट मिशेल्स।

36. प्रश्न: समाजशास्त्र का 'शिकागो स्कूल', जो अपने शहरी अध्ययन और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के लिए प्रसिद्ध है, 20वीं सदी की शुरुआत में किस शहर में फला-फूला?

उत्तर: शिकागो।

37. प्रश्न: 'संदर्भ समूह' की अवधारणा, एक ऐसा समूह जिससे कोई व्यक्ति अपनी तुलना करता है, को समाजशास्त्र में किसके द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था?

उत्तर: रॉबर्ट के. मर्टन।

38. प्रश्न: पुस्तक ओरिएंटलिज्म (1978), जो मध्य पूर्व के पश्चिमी प्रतिनिधित्व की आलोचना करती है, किस प्रभावशाली सांस्कृतिक आलोचक द्वारा लिखी गई थी?

उत्तर: एडवर्ड सईद।

39. प्रश्न: 'पवित्र' और 'अपवित्र' को धार्मिक जीवन की दो मौलिक श्रेणियों के रूप में किस समाजशास्त्री ने अपनी पुस्तक द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ द रिलीजियस लाइफ (1912) में प्रतिष्ठित किया?

उत्तर: एमील दुर्खीम।

40. प्रश्न: निबंध द मेट्रोपोलिस एंड मेंटल लाइफ (1903) किसने लिखा, जिसमें व्यक्ति पर शहरीकरण के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है?

उत्तर: जॉर्ज सिमेल।

41. प्रश्न: 'अति-वास्तविकता' (hyperreality) की अवधारणा, जहां वास्तविकता के अनुकरण वास्तविकता से अधिक वास्तविक हो जाते हैं, किस उत्तर-आधुनिक

विचारक से जुड़ी है?

उत्तर: जीन बॉड्रिलार्ड।

42. प्रश्न: 'पितृसत्ता' शब्द का पुरुष वर्चस्व की एक सामाजिक प्रणाली के रूप में व्यवस्थित विश्लेषण किस विचारधारा द्वारा किया गया?

उत्तर: नारीवादी सिद्धांत।

43. प्रश्न: किस भारतीय समाजशास्त्री ने भारतीय गांव को एक "छोटे गणराज्य" के रूप में वर्णित किया और उसकी आत्मनिर्भरता पर जोर दिया?

उत्तर: चार्ल्स मेटकाफ (हालांकि अक्सर समाजशास्त्रीय विमर्श में उद्धृत)।

44. प्रश्न: 'द्वंद्वात्मक समाजशास्त्र' दृष्टिकोण, जो पार्सोनियन प्रकार्यवाद को संघर्ष सिद्धांत के साथ संश्लेषित करने का प्रयास करता है, किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: राल्फ डाहरेनडॉर्फ।

45. प्रश्न: 'मैकडोनाल्डीकरण' की अवधारणा, जो नौकरशाही युक्तिकरण के प्रसार का वर्णन करती है, किस समाजशास्त्री ने अपनी 1993 की पुस्तक में विकसित की?

उत्तर: जॉर्ज रिट्ज़र।

46. प्रश्न: विचलन का 'लेबलिंग सिद्धांत', जो तर्क देता है कि विचलन बाहरी निर्णयों का परिणाम है, किस समाजशास्त्री के साथ सबसे अधिक जुड़ा हुआ है?

उत्तर: हावर्ड एस. बेकर।

47. प्रश्न: किस विचारक ने अपने 1919 के व्याख्यान "पॉलिटिक्स एज़ ए वोकेशन" में तर्क दिया कि आधुनिक राज्य 'भौतिक बल के वैध उपयोग पर एकाधिकार' रखता है?

उत्तर: मैक्स वेबर।

48. प्रश्न: भारतीय समाजशास्त्रीय समिति की स्थापना किस वर्ष हुई, जिसके संस्थापक अध्यक्ष जी.एस. घुर्ये थे?

उत्तर: 1951.

49. प्रश्न: अपने काम, उत्पादों, साथी श्रमिकों और मानवीय क्षमता से 'अलगाव' की

अवधारणा का वर्णन 1844 के आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों में किसके द्वारा किया गया था?

उत्तर: कार्ल मार्क्स।

50. प्रश्न: 'प्राप्त प्रस्थिति' और 'प्रदत्त प्रस्थिति' के बीच का अंतर सबसे पहले किस अमेरिकी मानवविज्ञानी द्वारा स्पष्ट किया गया था, जो समाजशास्त्र में प्रभावशाली थे?

उत्तर: राल्फ लिंटन।

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✅ **Core Concepts** – हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✅ **Key Thinkers & Theories** – नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✅ **Important Books** – वही किताबें, जो **exams** मे आती **year** सहित
- ✅ **Flow Charts** – हर जटिल टॉपिक को **1** पेज में समझो
- ✅ **Mind Maps** – तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और "Smart Study का असली formula"

🧠क्यों महत्वपूर्ण है

विषय की नींव और आधार होते है विचारक और **concepts.** हर बार जरूर सवाल बनते है **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📢 Topper बनना है? Toolkit है जवाब!

📦 Format: Digital PDF + Optional Print
📅 Latest Update: May 2025 तक

🚀 टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?

- **No Guesswork** – सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning** = तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

समाजशास्त्र विचारक टूल किट SAMPLE

1. ऑगस्टे कॉम्टे) 1798-1857(

परिचय

- एक फ्रांसीसी दार्शनिक जिन्हें व्यापक रूप से" समाजशास्त्र का संस्थापक "माना जाता है।
- वह समाज के वैज्ञानिक अध्ययन का वर्णन करने के लिए "समाजशास्त्र "शब्द का प्रयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे।
- वे प्रत्यक्षवाद के विकास में एक केन्द्रीय व्यक्ति थे। यह एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जो समाज के अध्ययन में प्राकृतिक विज्ञानों की विधियों को लागू करने की वकालत करता है।
- उनका प्राथमिक लक्ष्य" समाज का विज्ञान "बनाना था जो अतीत की व्याख्या कर सके और भविष्य की भविष्यवाणी कर सके ,जिससे सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में मदद मिल सके।
- उनका कार्य फ्रांसीसी क्रांति के कारण उत्पन्न सामाजिक उथल-पुथल का प्रत्यक्ष प्रतिउत्तर था।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- **प्रत्यक्षवाद :**यह विचार कि एकमात्र प्रामाणिक ज्ञान वैज्ञानिक ज्ञान है ,जो अवलोकन ,प्रयोग और तुलना पर आधारित है। उन्होंने तर्क दिया कि समाजशास्त्र को एक प्रत्यक्षवादी विज्ञान होना चाहिए।
- **तीन चरणों का नियम :**कॉम्टे का सिद्धांत कि मानव बौद्धिक विकास ,और इस प्रकार समाज का विकास ,तीन चरणों से होकर गुजरता है:
  1. **धार्मिक चरण :**समाज को अलौकिक देवताओं और आत्माओं के माध्यम से समझाया जाता है।
  2. **आध्यात्मिक चरण :**अमूर्त शक्तियों और सिद्धांतों) जैसे" प्रकृति ("का उपयोग घटनाओं को समझाने के लिए किया जाता है।
  3. **सकारात्मक चरण :**समाज को वैज्ञानिक अवलोकन और सार्वभौमिक कानूनों की खोज के माध्यम से समझा जाता है।
- **सामाजिक सांख्यिकी :**सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता बनाने वाली शक्तियों का अध्ययन। उन्होंने इसकी तुलना समाज की शारीरिक रचना से की ,इसकी संरचनाओं) जैसे ,परिवार ,धर्म ,भाषा (पर ध्यान केंद्रित किया।
- **सामाजिक गतिशीलता :**सामाजिक परिवर्तन और प्रगति की शक्तियों का अध्ययन। उन्होंने इसे समाज के शरीर विज्ञान के रूप में देखा ,और इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि यह तीन चरणों के माध्यम से कैसे विकसित होता है।
- **विज्ञानों का पदानुक्रम :**कॉम्टे ने विज्ञानों को उनकी जटिलता के आधार पर एक पदानुक्रम में व्यवस्थित किया ,जिसमें समाजशास्त्र सबसे ऊपर था क्योंकि वह सबसे जटिल था और सभी विज्ञानों में "रानी "था। क्रम इस प्रकार था :गणित ,खगोल विज्ञान ,भौतिकी ,रसायन विज्ञान ,जीव विज्ञान और

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

समाजशास्त्र।

- **"मानवता का धर्म :"**अपने बाद के कार्य में ,कॉम्टे ने सकारात्मक स्तर पर सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने के लिए एक नए धर्मनिरपेक्ष धर्म का प्रस्ताव रखा ,जिसमें समाजशास्त्री इसके उच्च पुजारी के रूप में कार्य करेंगे।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **सकारात्मक दर्शन का पाठ्यक्रम) 6 खंड ,1830-1842 :(यह** उनकी महान कृति है जिसमें उन्होंने प्रत्यक्षवाद के अपने दर्शन ,तीन चरणों के नियम और विज्ञानों के पदानुक्रम को रेखांकित किया ,तथा औपचारिक रूप से समाजशास्त्र के नए विज्ञान का प्रस्ताव रखा।
- **प्रत्यक्षवाद का एक सामान्य दृष्टिकोण) 1848 :(**उनकी दार्शनिक प्रणाली का अधिक संक्षिप्त सारांश , जो व्यापक पाठकों के लिए है।
- **सकारात्मक राजनीति की प्रणाली) 4 खंड ,1851-1854 :(यह** उनका बाद का कार्य था जिसमें उन्होंने" मानवता के धर्म "पर आधारित एक नई सामाजिक व्यवस्था के लिए अपने दृष्टिकोण को विस्तार से प्रस्तुत किया।

तथ्य

- ऑगस्टे कॉम्टे ने कभी भी विश्वविद्यालय में कोई स्थायी पद नहीं संभाला। उन्होंने अपना जीवन मुख्य रूप से ट्यूशन और अपने अनुयायियों की वित्तीय सहायता से कमाया ,जिसमें प्रसिद्ध अंग्रेजी दार्शनिक जॉन स्टुअर्ट मिल भी शामिल थे।

2. कार्ल मार्क्स) 1818-1883(

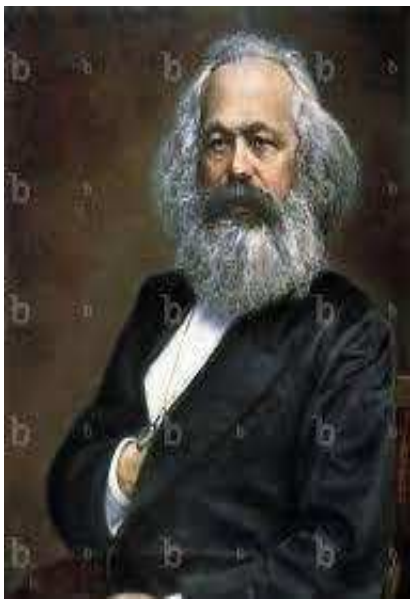

परिचय

- एक जर्मन दार्शनिक ,अर्थशास्त्री ,इतिहासकार और क्रांतिकारी समाजवादी।
- उनका कार्य समाजशास्त्र में संघर्ष परिप्रेक्ष्य का आधार बनता है।
- वह आधुनिक इतिहास के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक हैं , जिनके विचारों ने राजनीतिक आंदोलनों और शैक्षणिक विषयों को आकार दिया है।
- उनका विश्लेषण समाज को आकार देने में आर्थिक शक्तियों की भूमिका और वर्ग संघर्ष की अनिवार्यता पर केंद्रित है।
- उन्होंने फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ मिलकर काम किया।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- **ऐतिहासिक भौतिकवाद :**मार्क्स के सिद्धांत का मूल। यह मानता है कि आर्थिक आधार) उत्पादन के" साधन "और" संबंध ("समाज की नींव है ,जो" अधिरचना) "संस्कृति , राजनीति ,धर्म ,कानून (को आकार देता है।
- **वर्ग संघर्ष :**यह विचार कि पूरा इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास है। पूंजीवादी समाज में ,प्राथमिक संघर्ष पूंजीपति वर्ग) पूंजी के मालिक (और सर्वहारा वर्ग) मजदूर वर्ग (के बीच होता है।
- **अलगाव :**एक ऐसी स्थिति जिसमें पूंजीवादी समाज में श्रमिक अपने श्रम ,अपने द्वारा बनाए गए उत्पादों ,अपने साथी श्रमिकों और अपनी स्वयं की मानवीय क्षमता) गट्टुंग्सवेसेन या प्रजाति-सार (से अलग हो जाते हैं।
- **शोषण :**वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग को उनके द्वारा प्रदान किए गए श्रम के वास्तविक मूल्य से कम भुगतान करके लाभ कमाता है। इस अंतर को" अतिरिक्त मूल्य "कहा जाता है।
- **मिथ्या चेतना :**मन की एक अवस्था जिसमें सर्वहारा वर्ग अनजाने में ही प्रभुत्वशाली वर्ग की विचारधारा को स्वीकार कर लेता है ,जिससे वह अपने शोषण को पहचानने से वंचित रह जाता है।
- **वर्ग चेतना :**सर्वहारा वर्ग का अपने साझा हितों और शोषण के प्रति जागृत होना ,जिसे मार्क्स क्रांति के लिए आवश्यक पूर्वापेक्षा मानते थे।
- **द्वंद्वात्मक भौतिकवाद :**मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने के लिए हेगेल के द्वंद्ववाद)थीसिस-एंटीथीसिस-सिंथेसिस (को अपनाया। उन्होंने तर्क दिया कि एक आर्थिक प्रणाली) जैसे , पूंजीवाद (के भीतर आंतरिक विरोधाभास इसके पतन और एक नई प्रणाली) समाजवाद (के उद्भव का कारण बनेंगे।
- **साम्यवाद :**सामाजिक विकास का अंतिम चरण ,एक वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज जहां उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व होता है।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **कम्युनिस्ट घोषणापत्र) फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ ,1848 :(**एक शक्तिशाली राजनीतिक पुस्तिका जो साम्यवाद के सिद्धांतों को रेखांकित करती है और प्रसिद्ध रूप से घोषणा करती है ,"अब तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास है।"

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

- **दास कैपिटल) पूंजी(, खंड) I 1867 :(**उनकी महान कृति ,पूंजीवाद की राजनीतिक अर्थव्यवस्था की एक गहरी आलोचना ,जिसमें उन्होंने अधिशेष मूल्य ,शोषण और पूंजीवादी व्यवस्था के विरोधाभासों के अपने सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन किया है।) खंड II और III का संपादन और प्रकाशन एंगेल्स द्वारा मरणोपरांत किया गया था(।
- **जर्मन विचारधारा) फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ ,1846 में लिखित ,1932 में प्रकाशित :(**वह कार्य जिसमें मार्क्स और एंगेल्स ने पहली बार ऐतिहासिक भौतिकवाद के अपने सिद्धांत को पूरी तरह से विस्तृत किया।

तथ्य

- अर्थशास्त्र और पूंजी के बारे में व्यापक रूप से लिखने के बावजूद ,कार्ल मार्क्स ने अपना अधिकांश जीवन लंदन में अत्यधिक गरीबी में बिताया ,तथा अपने मित्र और सहयोगी फ्रेडरिक एंगेल्स से मिलने वाली वित्तीय सहायता पर काफी हद तक निर्भर रहे।

3. एमिल दुर्खीम) 1858-1917(

परिचय

- एक फ्रांसीसी समाजशास्त्री जिन्होंने औपचारिक रूप से समाजशास्त्र को एक अकादमिक विषय के रूप में स्थापित किया।
- वह समाजशास्त्र में कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थक हैं।
- वह आधुनिक औद्योगिक समाजों में सामाजिक व्यवस्था और सामंजस्य की समस्या से बहुत चिंतित थे।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समाजशास्त्र को "सामाजिक तथ्यों "का अध्ययन वस्तुओं के रूप में करना चाहिए ,तथा अनुभवजन्य और वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करना चाहिए।
- उन्होंने समाजशास्त्र का पहला यूरोपीय विभाग और अकादमिक पत्रिकाL ' Annéeकी स्थापना की सोशियोलॉजिक.

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- **सामाजिक तथ्य :**दुर्खीम की कार्यप्रणाली का मूल। सामाजिक तथ्य कार्य करने ,सोचने और महसूस करने के बाहरी और बाध्यकारी तरीके हैं जो व्यक्तिगत चेतना के बाहर मौजूद होते हैं) जैसे ,कानून , रीति-रिवाज ,मुद्रा(। समाजशास्त्र का विषय इन तथ्यों का अध्ययन है।
- **सामाजिक एकजुटता :**सामाजिक सामंजस्य जो समाज को एक साथ बांधता है। उन्होंने दो प्रकार की पहचान की:
  1. **यांत्रिक एकजुटता :**पारंपरिक समाजों में पाई जाती है ,जो अपने सदस्यों की समानता और साझा मान्यताओं पर आधारित होती है।
  2. **जैविक एकजुटता :**आधुनिक समाजों में पाई जाने वाली ,विशिष्ट भूमिकाओं) जैसे शरीर में अंग (वाले व्यक्तियों की अन्योन्याश्रितता पर आधारित।
- **एनोमी :**मानदंडहीनता या सामाजिक विनियमन की वह स्थिति जो तब होती है जब सामाजिक मानदंड कमज़ोर ,परस्पर विरोधी या अनुपस्थित होते हैं। उन्होंने एनोमी को उच्च आत्महत्या दरों और अन्य सामाजिक समस्याओं से जोड़ा।
- **श्रम विभाजन :**मार्क्स के विपरीत ,जो इसे अलगाव का स्रोत मानते थे ,दुर्खीम ने तर्क दिया कि आधुनिक समाज में श्रम विभाजन जैविक एकजुटता का स्रोत था ,जो लोगों को पारस्परिक निर्भरता के माध्यम से एक साथ बांधता था।
- **आत्महत्या :**अपने प्रसिद्ध अध्ययन में ,दुर्खीम ने सांख्यिकीय डेटा का उपयोग करके तर्क दिया कि आत्महत्या केवल एक व्यक्तिगत कार्य नहीं है ,बल्कि एक सामाजिक घटना है। उन्होंने आत्महत्या के चार प्रकारों की पहचान की :**अहंकारी ,परोपकारी ,असामाजिक और भाग्यवादी।**
- **सामूहिक विवेक) या चेतना :(**साझा विश्वासों ,विचारों और नैतिक दृष्टिकोणों का समूह जो समाज के भीतर एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य करता है। यह यांत्रिक एकजुटता वाले समाजों में अधिक

मजबूत होता है।

- **पवित्र और अपवित्र :**धर्म के अपने अध्ययन में ,उन्होंने तर्क दिया कि सभी समाज पवित्र) अलग रखी गई और निषिद्ध चीजें (और अपवित्र) सांसारिक ,रोज़मर्रा की दुनिया (के बीच अंतर करते हैं। धर्म पवित्र चीजों से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं की एक एकीकृत प्रणाली है।
- **अपराध का कार्य :**दुर्खीम ने तर्क दिया कि अपराध समाज का एक सामान्य और कार्यात्मक हिस्सा है , क्योंकि जब अपराधी को दंडित किया जाता है तो यह सामाजिक मानदंडों और मूल्यों की पुष्टि करने में मदद करता है।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **समाज में श्रम का विभाजन) 1893 :(**उनका डॉक्टरेट शोध प्रबंध ,जिसमें उन्होंने यांत्रिक और जैविक एकजुटता की अवधारणाओं का परिचय दिया।
- **समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम) 1895 :(**समाजशास्त्र के लिए उनका घोषणापत्र ,जिसमें उन्होंने "सामाजिक तथ्यों "के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए तर्क दिया।
- **आत्महत्या :समाजशास्त्र में एक अध्ययन) 1897 :(**एक ऐतिहासिक अनुभवजन्य अध्ययन जिसने व्यक्तिगत व्यवहार पर सामाजिक शक्तियों के प्रभाव को प्रदर्शित किया।
- **धार्मिक जीवन के प्राथमिक रूप) 1912 :(**उनकी अंतिम प्रमुख रचना ,जो धर्म का एक सामाजिक घटना के रूप में विश्लेषण करती है तथा पवित्र और अपवित्र की अवधारणाओं का परिचय देती है।

तथ्य

- एमिल दुर्खीम फ्रांसीसी रब्बियों की एक लंबी परंपरा से आते थे। हालाँकि उन्होंने एक धर्मनिरपेक्ष जीवन जिया ,लेकिन धर्म और नैतिकता में उनकी गहरी रुचि उनके पालन-पोषण से प्रभावित थी।

4. मैक्स वेबर) 1864-1920(

परिचय

- एक जर्मन समाजशास्त्री ,दार्शनिक और राजनीतिक अर्थशास्त्री जिन्हें समाजशास्त्र के संस्थापकों में से एक माना जाता है।
- उनका कार्य समाज का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है , तथा आर्थिक ,राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों के परस्पर प्रभाव पर बल देता है।
- उन्होंने एक ऐसी कार्यप्रणाली के पक्ष में तर्क दिया जो लोगों द्वारा अपने कार्यों से जोड़े जाने वाले व्यक्तिपरक अर्थों को समझने पर केंद्रित है) वर्सटेन(।
- उनके विचारों को अक्सर कार्ल मार्क्स के विशुद्ध भौतिकवादी सिद्धांतों की आलोचनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है।
- उन्होंने नौकरशाही ,धर्म ,सत्ता और सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन में गहन योगदान दिया।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- **वेरस्टेन) व्याख्यात्मक समझ :**(वेबर की प्रमुख पद्धति संबंधी अवधारणा। उन्होंने तर्क दिया कि समाजशास्त्रियों को वस्तुनिष्ठ अवलोकन से आगे जाकर मानवीय कार्यों के पीछे के व्यक्तिपरक अर्थों और प्रेरणाओं को समझने की कोशिश करनी चाहिए।
- **आदर्श प्रकार :**समाजशास्त्रियों द्वारा वास्तविक दुनिया के मामलों को मापने और तुलना करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक विश्लेषणात्मक उपकरण या मानसिक निर्माण। एक आदर्श प्रकार)उदाहरण के लिए ,"नौकरशाही का आदर्श प्रकार ("एक शुद्ध ,वैचारिक मॉडल है जिसे वास्तविकता में पूरी तरह से पाया नहीं जा सकता है।
- **युक्तिकरण :**आधुनिक समाज की दिशा का वर्णन करने के लिए वेबर का केंद्रीय विषय। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आधुनिक समाज में पारंपरिक मान्यताओं और भावनाओं की जगह गणना ,दक्षता और नियंत्रण का बोलबाला बढ़ता जा रहा है।
- **नौकरशाही :**उन्होंने नौकरशाही को संगठन का सबसे तर्कसंगत और कुशल रूप बताया ,जिसकी विशेषता एक स्पष्ट पदानुक्रम ,श्रम विभाजन ,लिखित नियम और अवैयक्तिकता है। उन्होंने इसके" लोहे के पिंजरे "को बनाने की क्षमता के बारे में भी चेतावनी दी।
- **"लौह पिंजरा :"**आधुनिक जीवन पर युक्तिकरण और नौकरशाही के अमानवीय और निराशाजनक प्रभावों का एक रूपक।
- **शक्ति और अधिकार :**वेबर ने शक्ति को दूसरों के प्रतिरोध के बावजूद भी लक्ष्य हासिल करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने वैध अधिकार) प्रभुत्व (के तीन" आदर्श प्रकारों "की पहचान की :**पारंपरिक ,करिश्माई और कानूनी-तर्कसंगत।**
- **सामाजिक स्तरीकरण :**उन्होंने वर्ग के बारे में मार्क्स के एकल-कारक दृष्टिकोण के विरुद्ध तर्क दिया , तथा स्तरीकरण के तीन-घटक सिद्धांत का प्रस्ताव रखा :**वर्ग**) आर्थिक स्थिति(, **स्थिति**) सामाजिक

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

सम्मान/प्रतिष्ठा(, और **पार्टी**) राजनीतिक शक्ति(।

- **प्रोटेस्टेंट नैतिकता :**अपने सबसे प्रसिद्ध कार्य में ,वेबर ने तर्क दिया कि कुछ प्रोटेस्टेंट संप्रदायों) विशेष रूप से केल्विनवाद (के मूल्य ,जैसे कड़ी मेहनत ,मितव्ययिता और तप ,ने आधुनिक पूंजीवाद की भावना के साथ एक" वैकल्पिक आत्मीयता "पैदा की ,जिससे इसके उत्थान में मदद मिली।
- **मूल्य-मुक्त समाजशास्त्र :**यह विचार कि समाजशास्त्रियों को वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करने के लिए अपने व्यक्तिगत मूल्यों को अपने वैज्ञानिक अनुसंधान से अलग रखना चाहिए।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **कट्टर नीति और पूंजीवाद की भावना) 1905 :(**उनका सबसे प्रसिद्ध निबंध ,जो प्रोटेस्टेंटवाद की नैतिकता को आधुनिक पूंजीवाद के उदय से जोड़ता है।
- **अर्थव्यवस्था और समाज) मरणोपरांत 1922 में प्रकाशित :(**उनकी महान कृति ,उनके समाजशास्त्रीय विचारों का एक व्यापक संग्रह ,जिसमें नौकरशाही ,शक्ति ,अधिकार और धर्म पर उनके सिद्धांत शामिल हैं।
- **राजनीति एक व्यवसाय के रूप में) 1919 :(**एक निबंध जिसमें उन्होंने राज्य और राजनीतिक नेतृत्व की प्रकृति पर चर्चा की ,तथा राज्य को इस रूप में परिभाषित किया कि" शारीरिक बल के वैध प्रयोग पर एकाधिकार "है।

तथ्य

- मैक्स वेबर को अपने पिता की मृत्यु के बाद 30 के दशक के मध्य में गंभीर मानसिक क्षति हुई ,जिसके कारण वे लगभग पाँच वर्षों तक काम करने या पढ़ाने में असमर्थ हो गए। उनकी अधिकांश प्रसिद्ध रचनाएँ इस दुर्बलतापूर्ण अवधि से उबरने के बाद लिखी गईं।

5. हर्बर्ट स्पेंसर) 1820-1903(

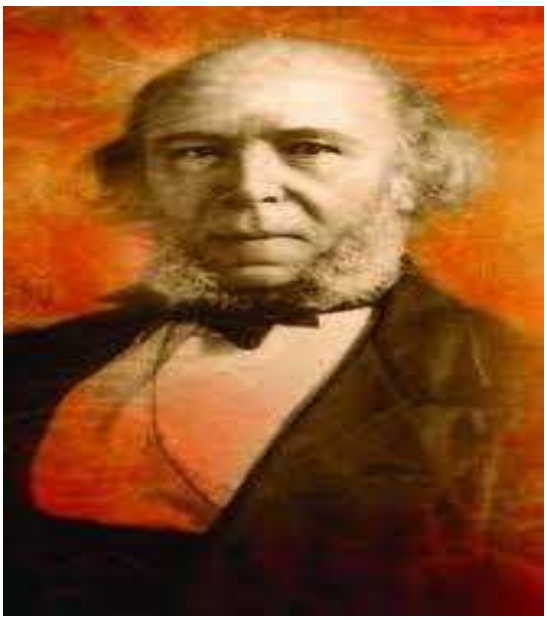

परिचय

- एक अंग्रेजी दार्शनिक ,जीवविज्ञानी ,मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री।
- वे विक्टोरियन युग के बौद्धिक जीवन में एक प्रमुख व्यक्ति थे , जिन्हें समाज में विकास के सिद्धांत को लागू करने के लिए जाना जाता था।
- उन्होंने प्रसिद्ध वाक्यांश" योग्यतम की उत्तरजीविता "गढ़ा , जिसे उन्होंने सामाजिक और आर्थिक जीवन पर लागू किया।
- उनका कार्य प्रायः कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है और इसका एक प्रमुख अग्रदूत है।
- अपने जीवनकाल में वे अत्यधिक लोकप्रिय थे ,लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उनका प्रभाव तेजी से कम हो गया।

महत्वपूर्ण अवधारणाएं

- **सामाजिक डार्विनवाद :**स्पेंसर द्वारा चार्ल्स डार्विन के प्राकृतिक चयन के विचारों को मानव समाजों पर लागू करना। उन्होंने तर्क दिया कि जीवों की तरह समाज भी प्रतिस्पर्धा और" सबसे योग्य की उत्तरजीविता "की प्रक्रिया के माध्यम से विकसित होता है।
- **"सबसे योग्य व्यक्ति का अस्तित्व :"**स्पेंसर द्वारा प्रकृति और समाज में प्रतिस्पर्धा के परिणाम का वर्णन करने के लिए गढ़ा गया एक वाक्यांश। उनका मानना था कि सबसे" योग्य) "बुद्धिमान , महत्वाकांक्षी (व्यक्ति और समाज सफल और समृद्ध होंगे।
- **सामाजिक जीव सादृश्य :**उन्होंने समाज और जैविक जीवों के बीच एक विस्तृत सादृश्य बनाया। उन्होंने तर्क दिया कि दोनों बढ़ते हैं ,अधिक जटिल हो जाते हैं ,और उनके परस्पर निर्भर हिस्से)संरचनाएँ और संस्थाएँ (होते हैं जो विशिष्ट कार्य करते हैं।
- **समाज का विकासवादी सिद्धांत :**स्पेंसर का मानना था कि सभी समाज सरल ,अविभेदित रूपों से अधिक जटिल ,विभेदित रूपों में विकसित होते हैं। उन्होंने समाज के दो मुख्य प्रकारों की पहचान की:
  1. **उग्रवादी समाज :**युद्ध और रक्षा के लिए संरचित समाज का एक सरल ,प्रारंभिक रूप ,जिसमें केंद्रीकृत नियंत्रण होता था।
  2. **औद्योगिक समाज :**स्वैच्छिक सहयोग ,अनुबंध और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित एक अधिक जटिल और विकसित समाज।
- **लेसेज-फेयर विचारधारा :**वे लेसेज-फेयर नीतियों के कट्टर समर्थक थे ,उनका तर्क था कि सरकार को समाज की प्राकृतिक विकास प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। उन्होंने पब्लिक स्कूलों ,कल्याण और राज्य विनियमन का विरोध किया।
- **विभेदीकरण और एकीकरण :**सामाजिक विकास के दो प्रमुख तंत्र। विभेदीकरण सामाजिक संरचनाओं और कार्यों का बढ़ता हुआ विशिष्टीकरण है ,जबकि एकीकरण इन विशिष्ट भागों के समन्वय की प्रक्रिया है।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **सामाजिक सांख्यिकी) 1851 :(**उनका पहला प्रमुख कार्य ,जिसमें उन्होंने पहली बार अपने स्वतंत्रतावादी राजनीतिक विचारों और सामाजिक प्रगति के सार्वभौमिक प्राकृतिक नियमों में अपने विश्वास को रेखांकित किया।
- **समाजशास्त्र के सिद्धांत) 3 खंड ,1876-1896 :(यह** उनका महान कार्य है ,समाजशास्त्र की पहली व्यापक पाठ्यपुस्तकों में से एक है ,जिसमें उन्होंने सामाजिक विकास और सामाजिक जीव के अपने सिद्धांतों को विस्तार से प्रस्तुत किया है।
- **समाजशास्त्र का अध्ययन) 1873 :(**एक लोकप्रिय पुस्तक जिसका उद्देश्य लोगों को सामाजिक मुद्दों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता के बारे में समझाना था।

तथ्य

- हर्बर्ट स्पेंसर ने वेस्टमिंस्टर एब्बे में दफनाए जाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया ,जो ब्रिटेन में एक प्रतिष्ठित सम्मान था। अपनी अपार प्रसिद्धि के बावजूद ,वह आजीवन गैर-अनुरूपतावादी और प्रतिष्ठान के आलोचक रहे।

1. अगस्टे कॉम्टे) 1798-1857(

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	फ्रांसीसी दार्शनिक ;समाजशास्त्र और प्रत्यक्षवाद के जनक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	-तीन चरणों का नियम - प्रत्यक्षवाद - सामाजिक सांख्यिकी और गतिशीलता
प्रमुख पुस्तकें) वर्ष सहित(	-सकारात्मक दर्शन का पाठ्यक्रम) 1830-1842(
उल्लेखनीय तथ्य	" -समाजशास्त्र "शब्द गढ़ा - समाज के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर जोर दिया

2. कार्ल मार्क्स) 1818-1883(

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	जर्मन दार्शनिक ,अर्थशास्त्री और सामाजिक सिद्धांतकार ;मार्क्सवाद के सह-संस्थापक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	-ऐतिहासिक भौतिकवाद - वर्ग संघर्ष - अलगाव - आधार और अधिरचना
प्रमुख पुस्तकें) वर्ष सहित(	-कम्युनिस्ट घोषणापत्र) 1848 - (दास कैपिटल) 1867(
उल्लेखनीय तथ्य	-दुनिया भर में कम्युनिस्ट आंदोलनों को प्रभावित किया - पूंजीवाद और बुर्जुआ समाज के आलोचक

3. एमिल दुर्खीम) 1858-1917(

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	फ्रांसीसी समाजशास्त्री ;समाजशास्त्र के एक विषय के रूप में इसके संस्थापक व्यक्तियों में से एक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	-सामाजिक तथ्य - श्रम विभाजन - सामूहिक विवेक - अराजकता
प्रमुख पुस्तकें) वर्ष सहित(	-समाज में श्रम का विभाजन) 1893 - (आत्महत्या) 1897 - (धार्मिक जीवन के प्रारंभिक रूप) 1912(
उल्लेखनीय तथ्य	-समाजशास्त्र को एक अकादमिक अनुशासन के रूप में स्थापित किया - अनुभवजन्य पद्धति की शुरुआत की

4. मैक्स वेबर) 1864-1920(

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	जर्मन समाजशास्त्री और राजनीतिक अर्थशास्त्री ;व्याख्यात्मक समाजशास्त्र में प्रमुख व्यक्ति।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	-वेरस्टेन) व्याख्यात्मक समझ - (आदर्श प्रकार - युक्तिकरण - नौकरशाही
प्रमुख पुस्तकें) वर्ष सहित(	-प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना) 1905 - (अर्थव्यवस्था और समाज)1922(
उल्लेखनीय तथ्य	-धर्म और पूंजीवाद को जोड़ा गया - विचारों ,संस्कृति और अर्थ की भूमिका पर जोर दिया गया

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

5. हर्बर्ट स्पेंसर) 1820-1903(

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	अंग्रेजी दार्शनिक और समाजशास्त्री ;समाज पर विकासवादी सिद्धांत लागू किया।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	-सामाजिक डार्विनवाद - जैविक सादृश्य - समाजों का विकास
प्रमुख पुस्तकें) वर्ष सहित(	-समाजशास्त्र का अध्ययन) 1873 - (समाजशास्त्र के सिद्धांत) 1876-96(
उल्लेखनीय तथ्य	-लोकप्रिय शब्द" योग्यतम की उत्तरजीविता - "प्रारंभिक संरचनात्मक कार्यात्मकता से प्रभावित

समाजशास्त्र महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं तालिका

1. **कम्युनिस्ट घोषणापत्र** (1848) - **कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स** : संघर्ष सिद्धांत के लिए एक आधारभूत पाठ, जिसमें ऐतिहासिक भौतिकवाद और वर्ग संघर्ष के सिद्धांतों को रेखांकित किया गया है।
2. **दास कैपिटल (पूंजी)** (1867) - **कार्ल मार्क्स** : राजनीतिक अर्थव्यवस्था और पूंजीवादी उत्पादन पद्धति की गहरी आलोचना, अधिशेष मूल्य और अलगाव जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत करना।
3. **समाज में श्रम का विभाजन** (1893) - **एमिल दुर्खीम** : यह इस बात का पता लगाता है कि समाज के यांत्रिक से जैविक रूपों में विकसित होने के साथ सामाजिक एकजुटता कैसे बदलती है।
4. **समाजशास्त्रीय विधि के नियम** (1895) - **एमिल दुर्खीम** : समाजशास्त्र को एक विज्ञान होने का तर्क देते हैं और इसके विषय वस्तु के रूप में "सामाजिक तथ्यों" की अवधारणा को पेश करते हैं।
5. **आत्महत्या: समाजशास्त्र में एक अध्ययन** (1897) - **एमिल दुर्खीम** : एक अग्रणी पद्धतिगत अध्ययन जो आत्महत्या दरों को सामाजिक एकीकरण और विनियमन से जोड़ता है।
6. **प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म** (1905) - **मैक्स वेबर** : प्रोटेस्टेंटिज्म की तपस्वी नैतिकता को आधुनिक पूंजीवाद के उदय से जोड़ने वाला एक प्रमुख ग्रंथ।
7. **अर्थव्यवस्था और समाज** (1922) - **मैक्स वेबर** : सामाजिक कार्रवाई, प्राधिकरण, नौकरशाही, और वर्ग, स्थिति और पार्टी जैसी प्रमुख अवधारणाओं को रेखांकित करने वाली एक महान कृति।
8. **माइंड, सेल्फ, एंड सोसाइटी (1934) - जॉर्ज हर्बर्ट मीड: प्रतीकात्मक** अंतःक्रियावाद का आधारभूत पाठ , जो बताता है कि सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से स्वयं का विकास कैसे होता है।
9. **द सोशल सिस्टम** (1951) - **टैल्कॉट पार्सन्स** : संरचनात्मक-कार्यात्मकतावाद में एक ऐतिहासिक कार्य, जो एकीकृत भागों वाली एक प्रणाली के रूप में समाज का एक भव्य सिद्धांत प्रस्तुत करता है।
10. **सामाजिक सिद्धांत और सामाजिक संरचना** (1949) - **रॉबर्ट के. मेर्टन** : एक प्रमुख कार्यात्मकतावादी ग्रन्थ जो "मध्य-श्रेणी सिद्धांत", "प्रकट और अव्यक्त कार्य" और "विसंगतियां" जैसी अवधारणाओं का परिचय देता है।
11. **द सोशियोलॉजिकल इमेजिनेशन** (1959) - **सी. राइट मिल्स** : मुख्यधारा के समाजशास्त्र की एक क्लासिक आलोचना जो समाजशास्त्रियों से "व्यक्तिगत परेशानियों" को "सार्वजनिक मुद्दों" से जोड़ने का आग्रह करती है।
12. **द प्रेजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ** (1956) - एर्विंग गोफमैन : मानव व्यवहार को समझाने के लिए रंगमंच के रूपक का उपयोग करते हुए, सामाजिक संपर्क के लिए नाटकीय दृष्टिकोण का परिचय देता है।
13. **उन्नत समाजों की वर्ग संरचना** (1973) - **एंथनी गिडेंस : आधुनिक समाजों में वर्ग का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण, जो उनके बाद के** संरचना सिद्धांत के लिए आधार तैयार करता है ।
14. **अनुशासन और दंड: जेल का जन्म** (1975) - **मिशेल फूको** : दंड प्रणालियों में बदलाव की पड़ताल करता है और शक्ति, ज्ञान और प्रवचन जैसी प्रमुख अवधारणाओं का परिचय देता है।
15. **स्वाद के निर्णय की एक सामाजिक आलोचना** (1979) - **पियरे बौर्डियू** : एक प्रमुख कार्य जो सामाजिक पदानुक्रमों को समझाने के लिए " आदत ", "क्षेत्र" और "सांस्कृतिक पूंजी" जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत करता है।
16. **द लॉजिक ऑफ प्रैक्टिस** (1980) - **पियरे बौर्डियू :** संरचना और एजेंसी के बीच की खाई को पाटते हुए, आदत और क्षेत्र की अपनी प्रमुख अवधारणाओं पर आगे विस्तार से प्रकाश डाला ।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

17. उत्तरआधुनिकता की स्थिति (1989) - डेविड हार्वे : एक प्रमुख पाठ जो आधुनिकतावाद से उत्तरआधुनिकतावाद तक सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलावों का विश्लेषण करता है।
18. नेटवर्क सोसायटी का उदय (1996) - मैनुअल कास्टेल्स : सूचना युग पर उनकी त्रयी का पहला खंड, जिसमें तर्क दिया गया है कि नेटवर्क हमारे समाजों की नई सामाजिक रूपरेखा है।
19. होमो हिरार्किकस : जाति व्यवस्था और उसके निहितार्थ (1966) - लुई ड्यूमॉन्ट: शुद्ध और अशुद्ध के बीच विरोध पर आधारित भारतीय जाति व्यवस्था का एक क्लासिक संरचनावादी विश्लेषण।
20. जाति, वर्ग और शक्ति (1966) - आंद्रे बेतेइले : भारत में एक ऐतिहासिक ग्राम अध्ययन जो जाति, वर्ग और राजनीतिक शक्ति के बीच बदलते संबंधों की जांच करता है।
21. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन (1966) - एम.एन. श्रीनिवास : भारतीय समाज को समझने के लिए प्रमुख अवधारणाओं, जैसे " संस्कृतीकरण " और "पश्चिमीकरण" का परिचय और विस्तार से वर्णन करता है।
22. द रिमेम्बर्ड विलेज (1976) - एम.एन. श्रीनिवास : लेखक की अपने फील्डवर्क की स्मृति पर आधारित एक अग्रणी कृति, जो ग्रामीण भारतीय जीवन के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
23. भारत में जाति: इसकी प्रकृति, कार्य और उत्पत्ति - जीएस घुर्ये : भारतीय समाजशास्त्र में एक आधारभूत ग्रंथ, जो जाति पर एक व्यापक इंडोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।
24. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि (1948) - एआर देसाई : भारत में राष्ट्रवाद के उदय को आकार देने वाली सामाजिक ताकतों का एक प्रमुख मार्क्सवादी विश्लेषण।
25. भारत में रिश्तेदारी संगठन (1953) - इरावती कर्वे : भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नातेदारी प्रणालियों का एक क्लासिक तुलनात्मक अध्ययन।
26. जेंडर ट्रबल: फेमिनिज्म एंड द सबवर्सन ऑफ आइडेंटिटी (1990) - जूडिथ बटलर : क्वीर थ्योरी और थर्ड-वेव फेमिनिज्म का एक आधारभूत पाठ जो जेंडर परफॉर्मेटिविटी की अवधारणा को प्रस्तुत करता है।
27. द सेकंड सेक्स (1949) - सिमोन डी बोवुआर : नारीवादी दर्शन और समाजशास्त्र की एक अभूतपूर्व कृति, जिसमें प्रसिद्ध रूप से कहा गया है, "एक महिला पैदा नहीं होती, बल्कि वह बन जाती है।"
28. ओरिएंटलिज्म (1978) - एडवर्ड सईद : उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययनों का एक आधारभूत पाठ जो "ओरिएंट" के पश्चिमी प्रतिनिधित्व की आलोचना करता है।
29. द ओपन सोसाइटी एंड इट्स एनिमीज़ (1945) - कार्ल पॉपर : राजनीतिक दर्शन में एक प्रमुख कार्य जो प्लेटो, हेगेल और मार्क्स के ऐतिहासिकता की आलोचना करता है।
30. जोखिम समाज: एक नई आधुनिकता की ओर (1986) - उलरिच बेक : तर्क देते हैं कि आधुनिक समाज तेजी से उन जोखिमों के प्रबंधन में व्यस्त हो रहे हैं जो वे स्वयं उत्पन्न करते हैं।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

1: समाजशास्त्र के संस्थापक पिता

सोचने वाला	अवधि	मुख्य दृष्टिकोण	प्रमुख अवधारणाएँ	महत्वपूर्ण कार्य
ऑगस्टे कॉम्टे	1798–1857	यक़ीन	तीन चरणों का नियम, सामाजिक सांख्यिकी और गतिशीलता, विज्ञान का पदानुक्रम	सकारात्मक दर्शन का पाठ्यक्रम
हर्बर्ट स्पेंसर	1820–1903	सामाजिक डार्विनवाद / जैविक सादृश्य	सामाजिक विकास, योग्यतम की उत्तरजीविता, उग्रवादी और औद्योगिक समाज	समाजशास्त्र के सिद्धांत
काल मार्क्स	1818–1883	ऐतिहासिक भौतिकवाद / संघर्ष	वर्ग संघर्ष, अलगाव, अधिशेष मूल्य, उत्पादन का तरीका	दास कैपिटल , द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो
एमाइल दुर्खीम	1858–1917	संरचनात्मक कार्यात्मकता	श्रम विभाजन , अराजकता, एकजुटता, पवित्र और अपवित्र	समाज में श्रम विभाजन , आत्महत्या
मैक्स वेबर	1864–1920	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र	सामाजिक क्रिया, वेरस्टेन , आदर्श प्रकार, प्राधिकरण, नौकरशाही, युक्तिकरण	अर्थव्यवस्था और समाज, प्रोटेस्टेंट नैतिकता...

2: प्रमुख समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य – एक तुलना

परिप्रेक्ष्य	प्रमुख समर्थक	विश्लेषण का स्तर	मुख्य विचार / फोकस
संरचनात्मक-कार्यात्मकतावाद	डर्कहेम, पार्सन्स, मेर्टन	मैक्रो	समाज एक जटिल प्रणाली है जिसके सभी भाग एकजुटता और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करते हैं।
संघर्ष सिद्धांत	मार्क्स, डाहरेंडोर्फ , कोसर	मैक्रो	समाज असमानता का क्षेत्र है जो संघर्ष और परिवर्तन उत्पन्न करता है।

स्यंबोलीक इंटेरक्तिओनिस्म	मीड, ब्लूमर , गोफमैन	माइक्रो	समाज व्यक्तियों की रोज़मर्रा की अंतःक्रियाओं का उत्पाद है। प्रतीकों और अर्थों पर ध्यान दें।
घटना विज्ञान / नृवंशविज्ञान	शुट्ज़ , गारफिंकेल	माइक्रो	किस प्रकार व्यक्ति रोजमर्रा की बातचीत और अंतर्क्रियाओं का उपयोग विश्व के बारे में सामान्य ज्ञान के दृष्टिकोण को बनाने के लिए करते हैं।
पोस्ट-आधुनिकतावाद	फूको, डेरिडा, ल्योटार्ड	दोनों	आधुनिकतावाद, भव्य सिद्धांतों (मेटा-कथाएँ) और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की आलोचना। प्रवचन, शक्ति और विखंडन पर ध्यान केंद्रित करें।

3: एमिल दुर्खीम - मुख्य अवधारणाएँ

अवधारणा	अर्थ	संदर्भ के	पाठ्य स्रोत
सामाजिक तथ्य	व्यक्ति के बाह्य, दबावपूर्ण शक्ति के साथ कार्य करने, सोचने और महसूस करने के तरीके।	समाजशास्त्रीय विधि	समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम
एकजुटता	सामाजिक सामंजस्य। **यांत्रिक** (समानता) और **जैविक** (अन्योन्याश्रितता)।	सामाजिक परिवर्तन	समाज में श्रम का विभाजन
अनोमी	आदर्शहीनता की स्थिति ; सामाजिक मानदंडों और मूल्यों का टूटना।	विचलन, आत्महत्या	श्रम विभाजन ...
पवित्र और अपवित्र	दुनिया का दो भागों में विभाजन: **पवित्र** (अलग, निषिद्ध) और **अपवित्र** (सांसारिक, रोज़मर्रा)।	धर्म	धार्मिक जीवन के प्राथमिक रूप

4: मैक्स वेबर – प्रमुख अवधारणाएँ

अवधारणा	अर्थ	संदर्भ के	पाठ्य स्रोत
Verstehen	सामाजिक क्रिया की सहानुभूतिपूर्ण या व्याख्यात्मक समझ।	समाजशास्त्रीय विधि	अर्थव्यवस्था और समाज
आदर्श प्रकार	एक विश्लेषणात्मक संरचना जिसका उपयोग वास्तविक दुनिया के मामलों का अध्ययन करने के लिए मापक के रूप में किया जाता है।	क्रियाविधि	अर्थव्यवस्था और समाज
सामाजिक कार्य	क्रिया जिससे व्यक्ति व्यक्तिपरक अर्थ जोड़ता है। (4 प्रकार: पारंपरिक, भावात्मक , मूल्य-तर्कसंगत, साधन -तर्कसंगत)।	सामाजिक सिद्धांत	अर्थव्यवस्था और समाज
अधिकार	वैध शक्ति. (3 प्रकार: पारंपरिक, करिश्माई, तर्कसंगत -कानूनी).	राजनीतिक समाजशास्त्र	अर्थव्यवस्था और समाज

5: कार्ल मार्क्स – प्रमुख अवधारणाएँ

अवधारणा	अर्थ	संदर्भ के	पाठ्य स्रोत
ऐतिहासिक भौतिकवाद	यह विचार कि भौतिक परिस्थितियाँ (अर्थव्यवस्था, उत्पादन का तरीका) ऐतिहासिक परिवर्तन के प्राथमिक चालक हैं।	इतिहास का सिद्धांत	जर्मन विचारधारा
वर्ग संघर्ष	संसाधनों को लेकर सामाजिक वर्गों (जैसे, पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग) के बीच मूलभूत संघर्ष।	सामाजिक परिवर्तन	कम्युनिस्ट घोषणापत्र
अलगाव की भावना	व्यक्तियों का अपने श्रम ,	पूंजीवाद की आलोचना	1844 की आर्थिक और

	उत्पादों, साथी श्रमिकों और मानव क्षमता से अलगाव।		दार्शनिक पांडुलिपियाँ
उत्पादन का तरीका	जिस तरह से एक समाज वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए संगठित होता है (जैसे, सामंतवाद, पूंजीवाद)। उत्पादन की शक्तियों और संबंधों से मिलकर बनता है।	आर्थिक समाजशास्त्र	राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचना में योगदान

6: प्रमुख भारतीय समाजशास्त्री और उनका योगदान

समाजशास्त्री	अवधि	प्रमुख योगदान / अवधारणा	प्रमुख कार्य
जी.एस.घुर्ये	1893–1983	इंडोलॉजिकल /पाठ्यात्मक दृष्टिकोण; जाति, जनजाति और शहरों का विस्तृत अध्ययन।	भारत में जाति और नस्ल
एमएन श्रीनिवास	1916–1999	संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण; व्यापक क्षेत्र कार्य; संस्कृतीकरण , पश्चिमीकरण, प्रमुख जाति की अवधारणाएँ।	आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, स्मरणीय गांव
ए.आर. देसाई	1915–1994	भारतीय समाज के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण; ऐतिहासिक-भौतिकवादी परिप्रेक्ष्य से राष्ट्रवाद और ग्रामीण समाजशास्त्र का विश्लेषण।	भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि
इरावती कर्वे	1905–1970	मानवशास्त्रीय एवं भारतशास्त्रीय दृष्टिकोण; भारत में नातेदारी प्रणालियों का व्यापक अध्ययन।	भारत में नातेदारी संगठन
लुई ड्यूमोंट	1911–1998	संरचनावादी दृष्टिकोण; पदानुक्रम और शुद्ध/अशुद्ध विरोध की विचारधारा के आधार पर जाति व्यवस्था का विश्लेषण।	होमो हियरार्किकस

UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
According NET EXAM Pattern
ALL SYLLABUS COVERED
DETAILED ANSWER
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

यूजीसी नेट समाजशास्त्र: आसान स्तर का मॉडल पेपर

इकाई 1: समाजशास्त्रीय सिद्धांत

1. आत्महत्या पर काम के लिए जाने जाने वाले समाजशास्त्र के संस्थापकों में से एक किसे माना जाता है?
   A) कार्ल मार्क्स
   B) मैक्स वेबर
   C) एमिल दुर्खीम
   D) जॉर्ज सिमेल

   उत्तर: C) एमिल दुर्खीम
   स्पष्टीकरण:
   1. एमिल दुर्खीम समाजशास्त्र को एक विशिष्ट शैक्षणिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने में एक प्रमुख व्यक्ति हैं।
   2. उनका प्रसिद्ध अध्ययन "आत्महत्या" 1897 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें आत्महत्या दर को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारकों का विश्लेषण किया गया था।
   3. उन्होंने समाज में सामान्यता का वर्णन करने के लिए 'एनोमी' की अवधारणा पेश की, जो व्यक्तिगत व्यवहार को प्रभावित करती है।
   4. दुर्खीम ने समाजशास्त्र की विषय वस्तु के रूप में सामाजिक तथ्यों, व्यक्तिगत कार्यों को आकार देने वाली बाहरी बाधाओं पर जोर दिया।
   5. संघर्ष पर मार्क्स के फोकस के विपरीत, दुर्खीम ने सामाजिक स्थिरता के लिए सामाजिक एकजुटता और एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया।
   6. उनके काम "द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी" (1893) ने यांत्रिक और जैविक एकजुटता प्रकारों की खोज की।
   7. दुर्खीम के प्रकार्यवादी दृष्टिकोण ने 20वीं शताब्दी में समाजशास्त्रीय विचारों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

2. कार्ल मार्क्स के सिद्धांत के केंद्र में कौन सी अवधारणा, किसी के काम, उत्पादों और स्वयं से अलगाव की भावना को संदर्भित करती है?
   A) वर्ग चेतना
   B) अलगाव
   C) मिथ्या चेतना

PROFESSORS ADDA

D) एनोमी

उत्तर: B) अलगाव

स्पष्टीकरण:

1. मार्क्स के अनुसार अलगाव, पूंजीवाद के तहत श्रमिकों को अपने श्रम से अलगाव महसूस होने का वर्णन करता है।
2. मार्क्स ने अपनी "1844 की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियाँ" में इस अवधारणा को विस्तार से रेखांकित किया।
3. श्रमिक अपने द्वारा बनाए गए उत्पाद से अलग हो जाते हैं और उसके अंतिम रूप या उपयोग पर नियंत्रण का अभाव हो जाता है।
4. वे श्रम की प्रक्रिया से भी अलग हो जाते हैं, जो रचनात्मक नहीं बल्कि मजबूर और निरर्थक लगता है।
5. अलगाव साथी श्रमिकों (प्रतिस्पर्धा) और अंततः उनकी अपनी मानवीय क्षमता ('प्रजाति-अस्तित्व') तक फैला हुआ है।
6. मार्क्स का मानना था कि अलगाव पर काबू पाने के लिए निजी संपत्ति और वेतन श्रम की पूंजीवादी व्यवस्था को खत्म करना आवश्यक है।
7. यह अवधारणा विश्व स्तर पर आधुनिक कार्य स्थितियों और श्रमिक असंतोष का विश्लेषण करने के लिए प्रासंगिक बनी हुई है।

3. मैक्स वेबर ने समाजशास्त्रीय अनुसंधान में किसके महत्व पर जोर देने के लिए 'वेर्स्टीन' शब्द का प्रयोग किया?

A) सांख्यिकीय विश्लेषण

B) वस्तुनिष्ठ अवलोकन

C) व्यक्तिपरक अर्थ को समझना

D) वर्ग संघर्ष

उत्तर: C) व्यक्तिपरक अर्थ को समझना

स्पष्टीकरण:

1. 'वेरस्टीन' एक जर्मन शब्द है जिसका अर्थ वेबर के समाजशास्त्र में 'समझ' या 'व्याख्यात्मक समझ' है।
2. मैक्स वेबर (1864-1920) ने तर्क दिया कि समाजशास्त्रियों को उन व्यक्तिपरक अर्थों को समझना चाहिए जो व्यक्ति अपने कार्यों से जोड़ते हैं।
3. यह दृष्टिकोण दुर्खीम की तरह केवल देखने योग्य बाहरी व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करने वाले विशुद्ध रूप से सकारात्मक तरीकों के विपरीत है।
4. वेबर ने 'वेर्स्टीन' को "द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म" (1905) जैसे कार्यों में लागू किया।

PROFESSORS ADDA

5. इसमें अभिनेता के दृष्टिकोण से दुनिया को देखने की सहानुभूतिपूर्ण समझ शामिल है।
6. यह पद्धति व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का केंद्र है, जो बाद में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और घटना विज्ञान को प्रभावित करती है।
7. वेबर का मानना था कि 'वेर्स्टीन' को कारणात्मक विश्लेषण के साथ जोड़ने से पूर्ण समाजशास्त्रीय व्याख्या मिलती है।

4. टैल्कॉट पार्सन्स का संबंध किस समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से सर्वाधिक है?

A) संघर्ष सिद्धांत

B) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

C) संरचनात्मक कार्यात्मकता

D) उत्तरआधुनिकतावाद

उत्तर: C) संरचनात्मक कार्यात्मकता

स्पष्टीकरण:

1. टैल्कॉट पार्सन्स (1902-1979) अमेरिकी समाजशास्त्र में संरचनात्मक प्रकार्यवाद के एक प्रमुख प्रस्तावक थे।
2. यह परिप्रेक्ष्य समाज को एक जटिल प्रणाली के रूप में देखता है जिसके हिस्से स्थिरता के लिए मिलकर काम करते हैं।
3. पार्सन्स ने 1951 के आसपास "द सोशल सिस्टम" में एजीआईएल स्कीमा (अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण, विलंबता) विकसित किया।
4. उन्होंने तर्क दिया कि परिवार, अर्थव्यवस्था और राजनीति जैसी सामाजिक संस्थाएँ सामाजिक अस्तित्व के लिए विशिष्ट कार्य करती हैं।
5. उनके कार्य का उद्देश्य सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं को व्यवस्थित रूप से समझाते हुए एक भव्य सिद्धांत का निर्माण करना था।
6. 20वीं सदी के मध्य में प्रकार्यवाद का बोलबाला था लेकिन संघर्ष और असमानता को कम महत्व देने के लिए इसकी आलोचना की गई।
7. पार्सन्स के विचारों ने चिकित्सा समाजशास्त्र और व्यवसायों के अध्ययन सहित कई क्षेत्रों को प्रभावित किया।

5. कौन सा भारतीय समाजशास्त्री 'संस्कृतीकरण' की अवधारणा के लिए जाना जाता है?

a) जी.एस. घुर्ये

B) एम.एन. श्रीनिवास

C) बी.आर. अंबेडकर

PROFESSORS ADDA

D) इरावती कर्वे

उत्तर: B) एम.एन. श्रीनिवास

स्पष्टीकरण:

1. एम.एन. श्रीनिवास (1916-1999) ने भारत में सामाजिक गतिशीलता का वर्णन करने के लिए संस्कृतिकरण की अवधारणा पेश की।
2. उन्होंने सबसे पहले इसे अपनी पुस्तक "रिलीजन एंड सोसाइटी अमंग द कूर्ग्स ऑफ साउथ इंडिया" (1952) में विस्तार से बताया।
3. संस्कृतिकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जहां निचली जातियां उच्च जातियों के अनुष्ठानों और प्रथाओं का अनुकरण करती हैं।
4. इस अनुकरण का उद्देश्य पारंपरिक जाति पदानुक्रम प्रणाली के भीतर ऊर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करना है।
5. श्रीनिवास ने 'प्रमुख जाति' अवधारणा का भी अध्ययन किया, जो भारत में ग्राम शक्ति की गतिशीलता को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।
6. उनके गाँव के अध्ययन, जैसे "द रिमेम्बर्ड विलेज" (1976) में गहन क्षेत्रीय कार्य विधियों का उपयोग किया गया।
7. समकालीन भारत में सामाजिक परिवर्तन और जाति की गतिशीलता का विश्लेषण करने के लिए श्रीनिवास की अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हैं।

6. पियरे बॉर्डियू की 'आदत' की अवधारणा का तात्पर्य है:

A) सामाजिक वर्ग संरचना

B) आर्थिक पूंजी

C) आंतरिक स्वभाव और धारणा की योजनाएं

D) शैक्षिक योग्यता

उत्तर: C) आंतरिक स्वभाव और धारणा की योजनाएं

स्पष्टीकरण:

1. हैबिटस फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बॉर्डियू (1930-2002) द्वारा विकसित एक मुख्य अवधारणा है।
2. यह हमारे जीवन के अनुभवों के कारण हमारे अंदर गहराई तक समाई हुई आदतों, कौशलों और स्वभावों को संदर्भित करता है।
3. ये स्वभाव सामाजिक संरचनाओं (जैसे वर्C) द्वारा आकार लेते हैं और हमारे कार्यों और धारणाओं को आकार देते हैं।
4. बॉर्डियू ने "आउटलाइन ऑफAथ्योरी ऑफ प्रैक्टिस" (1972) जैसे कार्यों में आदत पर व्यापक रूप से चर्चा

PROFESSORS ADDA

की।

5. आदत अक्सर अनजाने में काम करती है, हमारे स्वाद, प्राथमिकताओं और सामाजिक रूप से बातचीत करने के तरीकों का मार्गदर्शन करती है।
6. यह व्यक्तिगत एजेंसी को सामाजिक संरचना से जोड़ता है, यह दर्शाता है कि समाज कैसे व्यक्ति का हिस्सा बन जाता है।
7. आदत को समझने से यह समझाने में मदद मिलती है कि कैसे सामाजिक असमानताएँ पीढ़ियों के बीच सूक्ष्मता से उत्पन्न होती हैं।

7. 'लुकिंग-ग्लास सेल्फ' का विचार किस सिद्धांतकार द्वारा विकसित किया गया था?

A) जी.एच. घास का मैदान

B) इरविंग गोफमैन

c) चार्ल्स हॉर्टन कूली

D) अल्फ्रेड शुट्ज़

उत्तर: C) चार्ल्स हॉर्टन कूली

स्पष्टीकरण:

1. चार्ल्स हॉर्टन कूली (1864-1929) ने अपने काम "ह्यूमन नेचर एंड द सोशल ऑर्डर" (1902) में 'लुकिंग-ग्लास सेल्फ' अवधारणा पेश की।
2. यह वर्णन करता है कि हमारी आत्म-अवधारणा इस आधार पर कैसे विकसित होती है कि हम दूसरों को हमारे बारे में कैसा देखते हैं।
3. इस प्रक्रिया में तीन चरण शामिल हैं: दूसरों के सामने हमारी उपस्थिति की कल्पना करना, उनके निर्णय की कल्पना करना और उस निर्णय के बारे में महसूस करना।
4. यह अवधारणा बातचीत और व्याख्या के माध्यम से गठित स्वयं की सामाजिक प्रकृति पर प्रकाश डालती है।
5. कूली सूक्ष्म-स्तरीय सामाजिक प्रक्रियाओं पर जोर देने वाली प्रतीकात्मक अंत:क्रियावादी परंपरा का हिस्सा थे।
6. उन्होंने प्राथमिक समूहों (आमने-सामने की अंतरंगता) और माध्यमिक समूहों (अवैयक्तिA) के बीच भी अंतर किया।
7. लुकिंग ग्लास स्वयं आज भी सामाजिक मनोविज्ञान और सूक्ष्म समाजशास्त्र में एक मौलिक अवधारणा बनी हुई है।

8. जर्गेन हेबरमास को 'सार्वजनिक क्षेत्र' की अवधारणा के लिए जाना जाता है। यह मुख्य रूप से किसको संदर्भित करता है?

PROFESSORS ADDA

ALL SUBJECT AVAILABLE

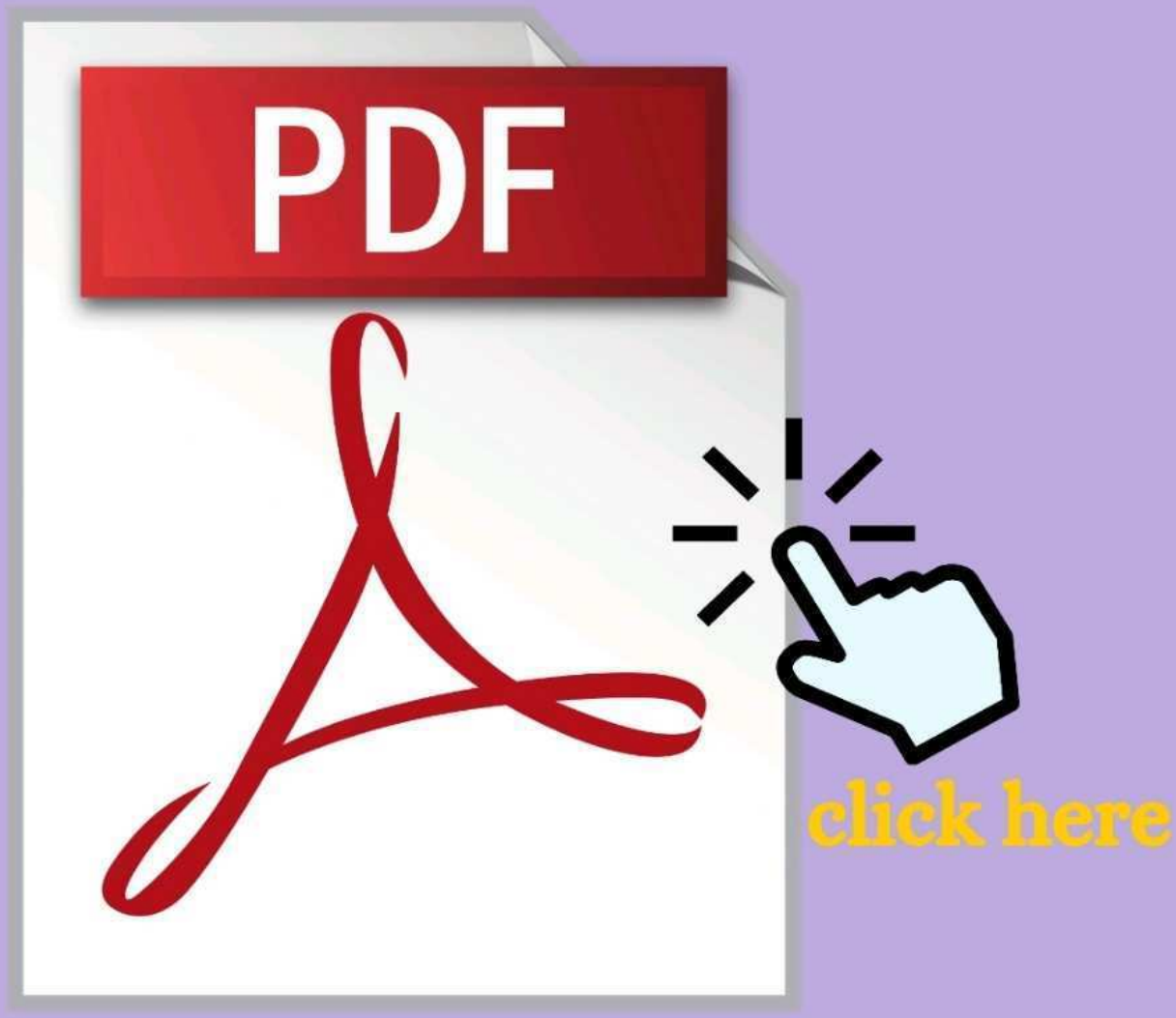

GET FREE UNIT WISE NOTES SAMPLE

+91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (Commerce)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (Education)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (English Literature)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (Sociology)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (Psychology)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (Political Science)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (History)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

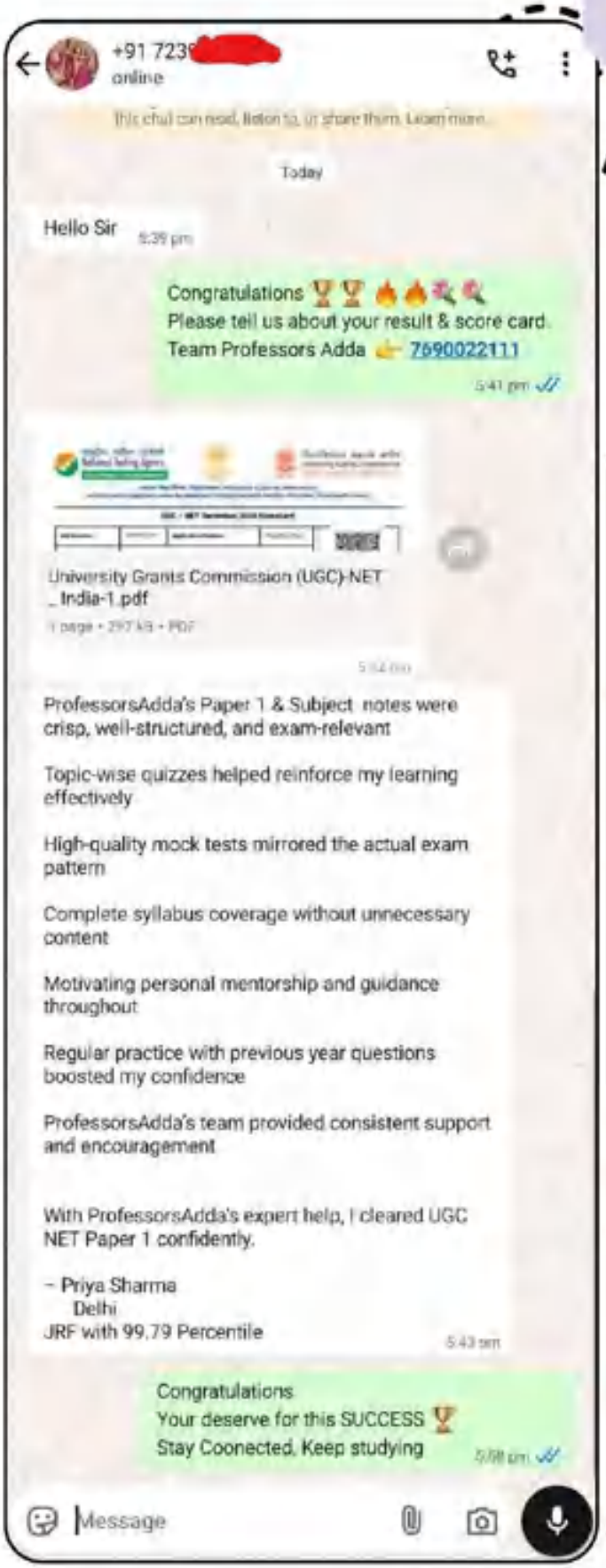

+91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

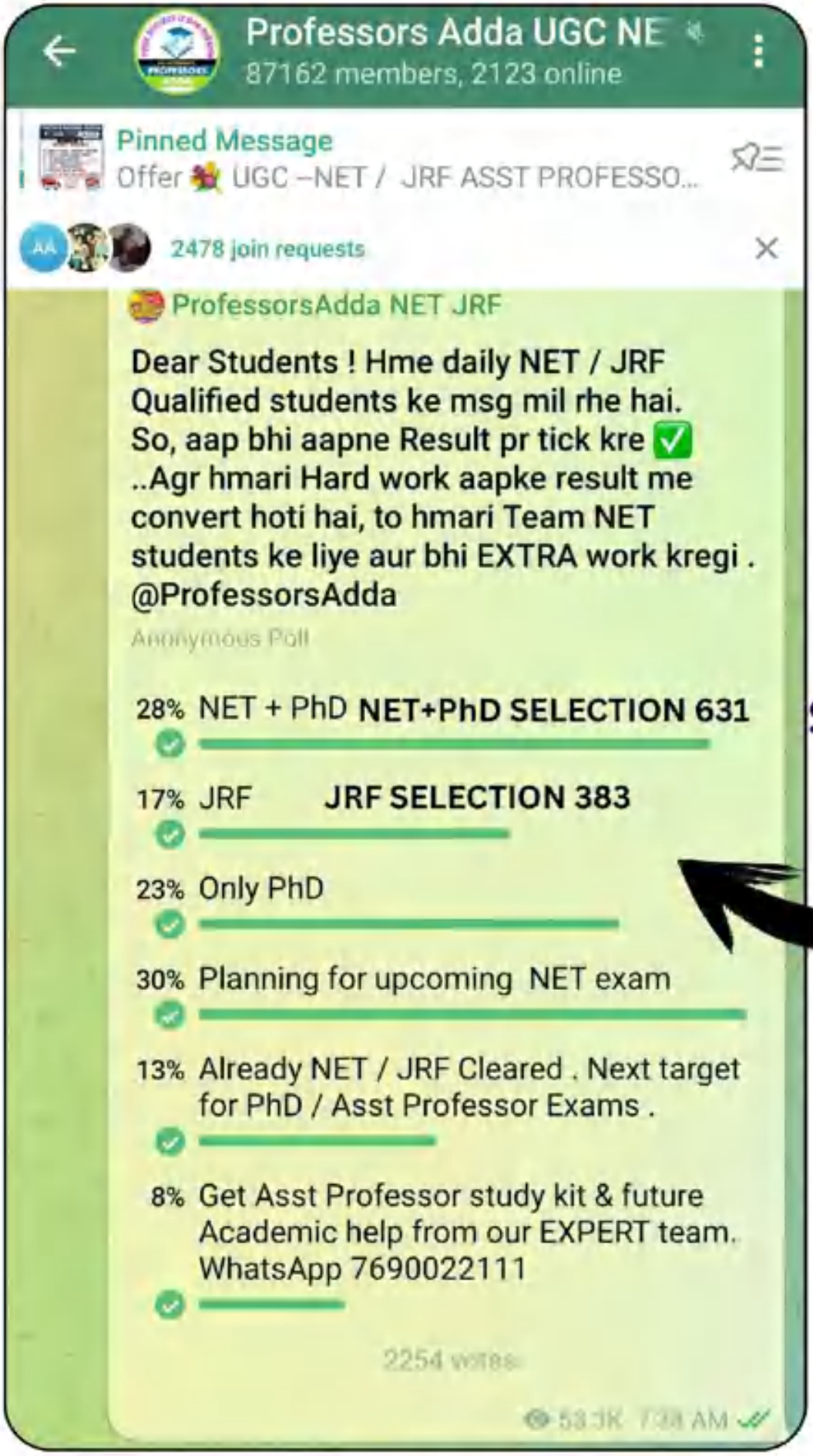

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Exclusive English GROUP

INDIA'S NO 1 UGC NET GROUP

CLICK HERE TO JOIN

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

MANY MORE SELECTION

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

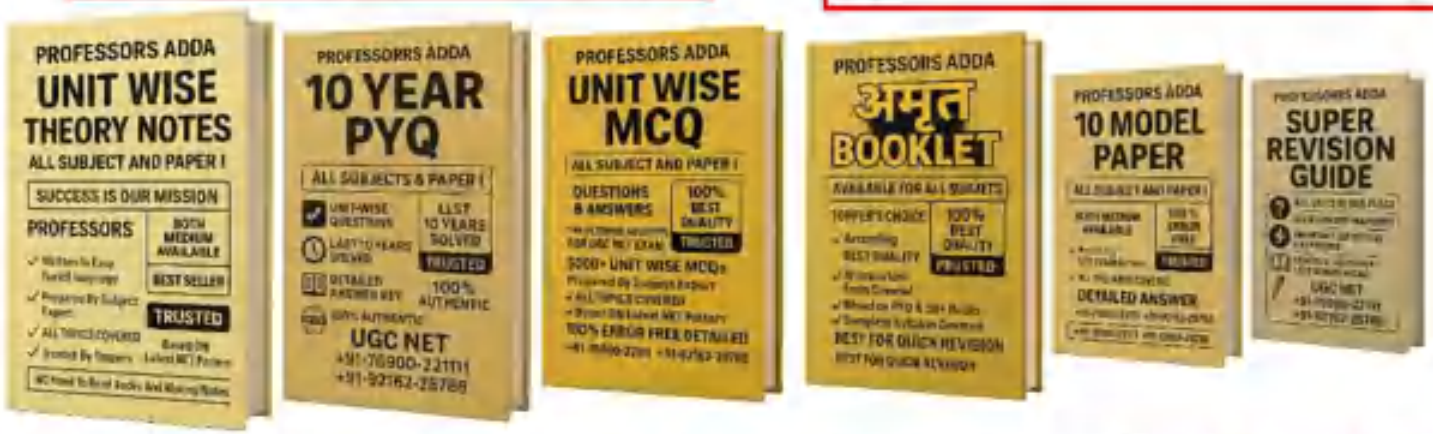

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

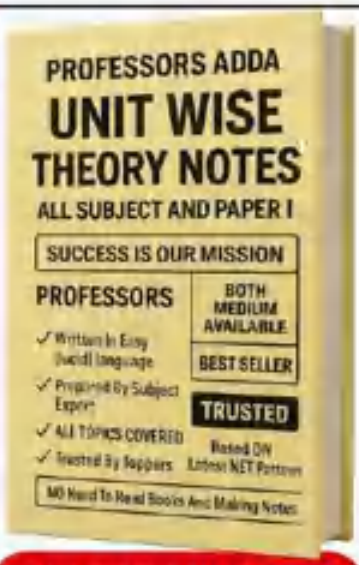

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

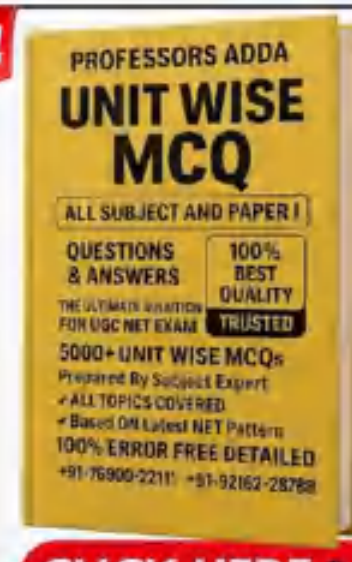

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

+91 7690022111+91 9216228788